पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

ज्येष्ठ-आषाढ़, कलियुगाब्द 5119, जून, 2017

नक्सलियों पर कब कसेगी नकेल ?

एसजेवीएन विश्व पटल पर
पवन ऊर्जा
सौर ऊर्जा
ताप ऊर्जा
विद्युत ट्रांसमिशन
जल ऊर्जा
2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में
460 मेगावाट की वृद्धि
412 मेगावाट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश
महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना
हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
आरएचपीएस को ''जल विद्युत परियोजनाएं शीघ्र पूरी करने'' की श्रेणी में ''गोल्ड शील्ड'' तथा ''सिल्वर शील्ड''।
ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए 'गोल्ड शील्ड' पुरस्कार।
विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 12 विद्युत परियोजनाओं का निर्माण-कार्य।
एसजेवीएन
SJVN
एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU
सीआईएन: L40101HP1988G01008409
शक्ति सदन, एसजेवीएन कॉरपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला-171006
www.sjvn.nic.in

पुनर्वित्तं पुनर्मित्रं पुनर्भार्यापुनर्मही।
एतत्सर्वं पुनर्लभ्यं न शरीरं पुनः पुनः॥

यद्यपि धन, संपति, मित्र, स्त्री, राज्य बार-बार मिल सकते हैं। लेकिन मनुष्य-शरीर केवल एक ही बार प्राप्त होता है। एक बार नष्ट हो जाने के बाद इसे पुनः प्राप्त करना असंभव है। इसलिए मनुष्य को शुभ कार्य करके इस देह का सदुपयोग करना चाहिए। जो मनुष्य प्रत्येक दिन सत्कार्य करते हैं, वास्तव में उनका ही जीवन सफल होता है।

वर्ष : 17 अंक : 6

मातृवन्दना

ज्येष्ठ-आषाढ़, कलियुगाब्द 5119, जून 2017

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

हिंसा और आंतक का पर्याय-नक्सलवाद

नक्सलियों ने प्रारम्भ में अपने जनजातीय, गरीब एवं उत्पीड़ित लोगों की छुट-पुट सहायता करके उनका विश्वास अर्जित किया। राज्य सरकारों ने भी उन क्षेत्रों के विकास में पूरी गम्भीरता नहीं दिखाई। अब जब पानी सिर से ऊपर जा चुका है, उन्हें होश आया है। इन क्षेत्रों के विकास के लिए अपेक्षित बजट का प्रावधान किया गया है। विकास कार्यों को गति मिल रही है। प्रभावित क्षेत्र अपने हाथों से खिसकने की तिलमिलाहट में नक्सली केंद्रीय सुरक्षा बल के सैनिकों पर आकस्मिक आक्रमण कर भयावह स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं।

सम्पादकीय	*हिंसा और आतंक का पर्याय*	.3
प्रेरक प्रसंग	*सिद्धान्त हो तो ऐसा*	.4
चिंतन	*मानव जीवन का रहस्य*	.5
आवरण	*नक्सलवाद एक मानसिक विचलन*	.8
संगठनम्	*सकारात्मक पत्रकारिता करें पत्रकार*	.10
पुण्य स्मरण	*सेवाभावी पन्नालाल का अवसान*	.12
देश प्रदेश	*जी.एस.टी. के तहत हटेंगे*	13
देवभूमि	*पंचानन महादेव गुफा*	15
घूमती कलम	*कश्मीर और केन्द्र सरकार*	17
प्रतिक्रिया	*तीन तलाक से निजात*	19
विविध	*मनु की समरस सामाजिक*	20
काव्य जगत	*ममता की कामधेनु*	22
स्वास्थ्य	*जरूरी है खाद्य तेलों की*	23
कृषि	*जैविक खेती से*	24
महिला जगत	*सबल समाज के विकास में*	26
दृष्टि	*महामहिम राज्यपाल द्वारा*	27
समसमायिकी	*आइए जानें रैनसमवेयर*	28
विश्वदर्शन	*चीन ने दाढ़ी रखने*	30
बाल जगत	*असम और अरूणाचल का*	31

पाठकीय

महोदय,

हिमाचल प्रदेश में 3753 के लगभग नम्बरदार हैं जिनको पूर्व भाजपा सरकार ने 2012 में 2000 वार्षिक मानदेय दिया था। अब वर्तमान प्रदेश सरकार ने इसे बढ़ाकर 1500 रूपए मासिक कर दिया है। हिमाचल सरकार ने नम्बरदारों का मानदेय बढ़ाकर उनकी भूमिका को सराहा उसके लिए प्रदेश नम्बरदार महासंघ प्रदेश सरकार का धन्यवाद व आभार प्रकट करता है। नम्बरदार राजस्व विभाग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भू राजस्व (मामला) एकत्रित करना, भूमि विक्रय में पहचान, इन्तकाल व गांव में भूमि से सम्बन्धित झगड़ों का सरलता से निपटारा करना आदि महत्वपूर्ण कार्यों से समाज व सरकार में कड़ी का काम करते हैं। अगर सरकार नम्बरदारों को और अधिक जिम्मेदारी देती है तो जमीनी झगड़ों को अदालत से पहले सुलझाने का काम करके वे लोगों को समय व खर्चे से बचा सकते हैं। सरकार पंचायतों में व सरकारी कार्यों में नम्बरदारों को नई जिम्मेदारी देती है तो नम्बरदार महासंघ उसे बखूबी निभाने के लिए तैयार है। ❖ **भीम सिंह चौहान, महासचिव हिमाचल, नम्बरदार महासंघ**

महोदय,

मैं आपकी पत्रिका का स्थाई पाठक बनना चाहता हूं। यह पत्रिका प्रेरणा की स्त्रोत है। यह पत्रिका हमारी प्राचीन विचारधारा एवं संस्कृति का वास्तविक दर्पण है। भारत के बौद्धिक विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मैंने अपने मित्र के घर से इस पत्रिका को देखा, इसके आकर्षक मुख पृष्ठ को देखकर अंदर से देखने व पढ़ने की उत्कण्ठा जागृत हुई। पत्रिका के अन्दर के समसामयिम विषय भी अपने प्रदेश के लिए पर्याप्त अनुकूल लगा। कृपया इस पत्रिका को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास करें। ❖

नोए राम, बंजार, कुल्लू, हि०प्र०

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

महोदय,

अपने मित्र के घर गया था तो सामने मेज़ पर एक पत्रिका की ओर नज़र गई। हाथ में लेकर देखा तो सामान्य सी लगी लेकिन कृपया इसके बारे में अवगत करवायें कि आपके पास डाक से भेजने की व्यवस्था है वार्षिक शुल्क कितना तथा आजीवन सदस्य की कीमत कितना है तथा आजीवन सदस्यता की मातृवन्दना संस्था की ओर से क्या आकर्षक उपहार व अन्य सुविधाएं हैं। पत्रिका में लेख सारगर्भित और मूल्यपरक होते हैं, साथ ही प्रदेश और देश भर के विद्वान लेखकों द्वारा आप्लावित जानकारी से ज्ञानवर्धन होता है। ❖ **अनेकराम शर्मा घुमारवीं, जिला बिलासपुर**

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को हिन्दु साम्राज्य दिवस, संत कबीर जंयती, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस व भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्मरणीय दिवस (जून)

गंगा दशहरा	**4 जून**
निर्जला एकादशी	**5 जून**
हिन्दु साम्राज्य दिनोत्सव	**7 जून**
संत कबीर जंयती	**9 जून**
मोहिनी एकादशी	**20 जून**
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस	**21 जून**
भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा	**25 जून**

हिंसा और आंतक का पर्याय-नक्सलवाद

सभी भारतीय विचारधाराएं पुरातनकाल से ही सत्यप्रेरित एवं अंहिसावादी रही है। मूलत: शुद्ध सात्विक और आध्यात्मिक विचारों से सम्पन्न विभिन्न विचारधाराओं का मूल उद्देश्य लोक कल्याण ही रहा है। इन विचार धाराओं का अनुपालन करने वाली भारतीय संतति ने संकटकालीन अथवा विषम परिस्थितियों में भी अपने धैर्य, तितीक्षा और संयम का परिचय दिया है। विश्व के कई देशों में एक ऐसी विचारधारा बड़ी तेजी से पनपी जिससे भारत भी अछूता न रह पाया। पूंजीवाद के विरूद्ध खड़े होने तथा सबके लिए समान अधिकार दिलाने का दावा करने वाली यह वामपंथी विचारधारा भले ही आज पूरे विश्व में अप्रासांगिक हो चुकी हो किन्तु भारत में इसका एक वर्ग आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन चुका है। जिसने 2004 के बाद से और अधिक गम्भीर रूप धारण कर लिया है। पीपुल्स वार ग्रुप (पीडब्ल्यूजी) माओइस्ट कम्युनिस्ट सेंटर (एमसीसी) की दलीय एकता एवं छूटपुट बिखरे समूहों ने आपस में मिलकर भाकपा (माओवादी) का गठन कर नक्सलवाद को 18 राज्यों के 252 जिलों में फैला दिया। इस प्रकार देश के लगभग 35 प्रतिशत भू-भाग पर नक्सली चरमपंथियों का जाल फैला गया था। संतोष की बात यह है कि अब यह संख्या घट कर 18 राज्यों के 106 जनपदों तक सीमित हो गई है। वर्तमान में छत्तीसगढ़, झारखण्ड, ओडिशा और बिहार नक्सलवाद से सर्वाधिक प्रभावित राज्य हैं।

कोई विचारधारा जब चरमपंथियों के हाथ में चली जाती है तो वह अपने मूल उद्देश्य से भटक कर हिंसा का दामन थाम लेती है। आर्थिक और सामाजिक शोषण के विरूद्ध चारू मजूमदार कानू सन्याल आदि कम्यूनिस्टों द्वारा संचालित किसान विद्रोह ही आज सशस्त्र नक्सलवादी आंदोलन बन चुका है जिसमें 2004 के पूर्वार्द्ध में सशस्त्र छापामार नक्सलियों की संख्या लगभग 7000 थी जो आज बढ़कर 16,000 हो गई है। इनके पास सशक्त वित्तीय आधार है। ये एक वर्ष में लगभग 1200 करोड़ रूपए की निश्चित धन राशि संचित करते हैं। विदेशों से विशेष रूप से चीन से इन्हें हथियारों के साथ-साथ आर्थिक सहायता भी प्राप्त होती है। ये जबरन वसूली, भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों से घूस, भूस्वामी, ठेकेदार, ट्रांस्पोर्टर आदि से लेवी द्वारा धन-संग्रह करते हैं। यहां तक कि अपने प्रभावित क्षेत्रों में सरकार द्वारा विकास कार्यों के लिए दिए गए धन में से भी अपना हिस्सा सरकारी अधिकारियों से वसूलते हैं। इन्हीं प्रभावित क्षेत्रों में निजी कंपनियों द्वारा कोयला, बिजली तथा अन्य कई योजनाओं से संबन्धित कार्य तभी आगे बढ़ सकते हैं जब सर्वप्रथम इन नक्सलियों की आर्थिक आवश्कताएं पूर्ण की जा चुकी हैं।

नक्सलियों ने प्रारम्भ में अपने जनजातीय, गरीब एवं उत्पीड़ित लोगों की छुट-पुट सहायता करके उनका विश्वास अर्जित किया। राज्य सरकारों ने भी उन क्षेत्रों के विकास में पूरी गम्भीरता नहीं दिखाई। अब जब पानी सिर से ऊपर जा चुका है, उन्हें होश आया है। इन क्षेत्रों के विकास के लिए अपेक्षित बजट का प्रावधान किया गया है। विकास कार्यों को गति मिल रही है। प्रभावित क्षेत्र अपने हाथों से खिसकने की तिलमिलाहट में नक्सली केंद्रीय सुरक्षा बल के सैनिकों पर आकस्मिक आक्रमण कर भयावह स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं। इसी का दुखद परिणाम देखने को प्राप्त हुआ जब विगत मास सुकमा में सी.आर.पी.एफ के सड़क सुरक्षा में लगे हुए 25 जवानों पर 300 नक्सलियों ने अचानक हमला किया।

हिंसा की इन वारदातों से केन्द्र और राज्य सरकारों को सचेत होना पड़ेगा। केवल केंद्रीय सुरक्षाबल के जवानों को इन क्षेत्रों में तैनात कर समस्या का समाधान सम्भव नहीं और कई उपाय सोचने होंगे मसलन उनको मिलने वाली अर्थिक सहायता और हथियारों की आपूर्ति के मूल स्त्रोतों का पता लगाकर उस पर रोक लगानी होगी। प्रभावित क्षेत्रों में सेना का सहयोग लेकर विकास कार्यों को और अधिक तेजी से बढ़ाना होगा साथ ही चिन्हित नक्सली अड्डों को नेस्तनाबूद कर सशस्त्र नक्सलियों की धर-पकड़ करनी होगी। इसके लिए स्थानीय पुलिस बल और गुप्तचर एजेंसियों को और अधिक सुदृढ़ सशक्त एवं सक्रिय करना होगा। सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र की आम जनता का विश्वास जीत कर ही इस नक्सलवाद को अन्तत: समाप्त किया जा सकता है।

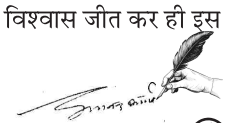

सिद्धांत हो तो ऐसा

यह उन दिनों की घटना है, जब देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पटना हाईकोर्ट में वकालत करते थे। वह अपनी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के लिए विख्यात थे। वह हमेशा पीड़ितों, वंचितों के पक्ष में खड़े होते थे और उन्हें न्याय दिलाने का भरपूर प्रयास करते थे। अपने इस सिद्धांत के चलते वह लाखों रूपये फीस के प्रस्ताव को भी आसानी से ठुकरा देते थे। एक बार विख्यात समाज सुधारक भवानीलाल सन्यासी का सिफारिशी पत्र लेकर एक व्यक्ति उनके पास आया। उसका अपनी किसी निकट संबंधी विधवा महिला से संपत्ति को लेकर विवाद चल रहा था। वह राजेन्द्र बाबू को अपना वकील बनाना चाहता था। राजेन्द्र बाबू ने उसके कागजात देखे तथा गम्भीर होकर बोले, 'कागज देखकर मैं समझ गया हूं कि इस सम्पत्ति के असली मालिक तुम नहीं, वह विधवा महिला है। तुमने इतनी चालाकी से कागज तैयार किए हैं कि कानूनी दृष्टि से तुम इसके हकदार बन सकते हो, पर एक विधवा महिला की आह तुम्हारे लिए बहुत घातक सिद्ध हो सकती है। मैं एक विधवा महिला का हक छीनने में तुम्हारी मदद बिल्कुल नहीं कर सकता। यह मेरे सिद्धांत के खिलाफ बात होगी। इसलिए मेरा सुझाव यह है कि तुम उस बेचारी की सम्पत्ति हजम करने के पाप से बचो। किसी की धन-सम्पत्ति हथियाने से व्यक्ति कभी भी सुख-शांति नहीं पा सकता।' राजेन्द्र बाबू की बात सुनकर उसका हृदय बदल गया तथा उसने उनके सामने ही वे कागज फाड़कर फेंक दिए। इस तरह से राजेन्द्र बाबू लोगों को विचार बदल देते थे और कई बार मामला न्यायिक प्रक्रिया में जाने से पहले ही सुलझ जाता था। उनसे प्रभावित होकर कई लोग देश सेवा के रास्ते पर चले आए थे। ❖

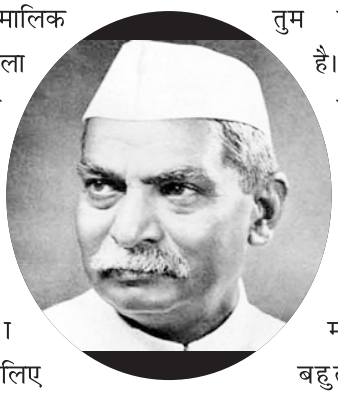

घायल जीवों के लिए भी हेल्पलाइन

- अभिनव श्रीहन

बचपन से ही मुझे पशु-पक्षियों से प्यार था। हम दिल्ली के मोतीबाग की सरकारी कॉलोनी मं रहते थे। वहां मैं पिल्लों के लिए छोटे-छोटे घर बनाता था। लेकिन मेरे वहां से हटते ही लोग पत्थर मारकर उन्हें तोड़ देते थे। फिर मैंने एक दिन उन पिल्लों के लिए अंडरग्राउंड घर बनाए। पर उस दिन इतनी बारिश हुई कि उनमें पानी भर गया। मैं एक थैले में उन पिल्लों को भरकर घर ले आया। थोड़ा बड़ा हुआ, तो मैंने घायल पशु-पक्षियों की सेवा-सुश्रुषा शुरू की और वैसी जगहों पर नियमित जाने लगा, जहां ऐसे पशु रखे जाते थे। मैं चूंकि फिल्में बनाता हूं, लिहाजा मैंने पशुओं की देखभाल आदि पर टेलीविजन कार्यक्रम बनाने के बारे में सोचा था। लेकिन चूंकि वह संभव नहीं हो पाया, ऐसे में, टीवी चैनलों के लिए छोटी-छोटी फिल्में बनाता हूं। फिर मैंने घायल पक्षियों की देख-देख के लिए 'फॉना पुलिस'नाम से एक हेल्पलाइन गठित की। दरअसल मैं डिस्कवरी चैनल पर 'एनिमल पुलिस' नाम का कार्यक्रम देखा करता था, जिसमें एक टीम जाकर घायल पशुओं को बचाती थी। इसी से फॉना पुलिस का विचार आया। बाद में हमारी इस हेल्पलाइन में घायल पशुओं की देख-रेख को भी जोड़ा गया।

लेकिन मेरा अभियान सिर्फ इनकी सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि मैं पशु-पक्षियों के प्रति लोगों को जागरूक करने की कोशिश करता हूं, क्योंकि जब तक हम पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील नहीं होंगे, तब तक मेरे या दूसरे लोगों द्वारा चलाए जाने वाले अभियान का कोई खास अर्थ नहीं होगा। हमारी टीम ने तोतों को पिंजरे में बंद करने के खिलाफ दिल्ली के मॉल में अभियान चलाया। कम लोग जानते है कि पिंजरे में रहने वाली चिड़िया घायल हो जाती है। ऐसी चिड़ियों को हम बचा तो लेते हैं, पर वे बहुत दिनों तक उड़ने की स्थिति में नहीं होती।

पिछले दिनों हम बुंदेलखंड में गायों को बचाने के अभियान में गए थे। वहां चार साल बाद खेती की स्थिति सुधारी, तो विगत नवंबर में लोगों ने तमाम गायों को स्कूलों, अस्पतालों और ऐसी दूसरी जगहों में बंद कर दिया था, ताकि वे फसल में मुंह न मारें। इन गायों को खाने के लिए कुछ नहीं दिया जा रहा था। हमने वहां कुछ स्थानीय लोगों की मदद ली और गायों को चारा-पानी मुहैया कराने के साथ उन्हें मुक्त कराने का अभियान भी शुरू किया। ❖

मानव जीवन रहस्य

-चेतन कौशल ''नूरपुरी''

ईश्वर की रचना जितनी आर्कषक है, उतनी विचित्र भी है। जड़-चेतन उसके दो रूप हैं। इनमें पाई जाने वाली विभिन्न वस्तुओं और प्राणियों की अपनी-अपनी जातियां हैं। इन जातियों में मात्र मनुष्य ही प्रगतिशील प्राणी है। वह अपने विवेक का स्वामी है। ऐसे किसी प्रगतिशील साधक के लिए, चाहे वह सांसारिक विषय हो या आध्यात्मिक, प्रगति-पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहने का उसका अपना प्रयत्न तब तक जारी रहता है जब तक उसे सफलता नहीं मिल जाती। वह कभी नहीं देखता है कि उसने कितनी यात्रा तय कर ली है? वह देखता है, उसकी मंजिल कितनी दूर शेष रह गई है? वहां तक कब और कैसे पहुंचा जा सकता है? सांसारिक विकास नश्वर, अल्पकालिक और सदैव दुखदायक विषय है जबकि मानसिक विकास अनश्वर, दीर्घकालिक, सर्वसुखदायक तथा शान्तिदाता है। मानसिक विकास करते हुए साधक को सुख तथा शान्ति प्राप्त होती है। वह अपने योगाभ्यास से कुण्डलिनी जागरण, काया-कल्प, दूर-बोध, विचार सम्प्रेषण, दूरदर्शन आदि गुणों से स्वयं ही सम्पन्न हो जाता है। मनुष्य तो मनुष्य है, वह देव या ईश्वर कभी हो नहीं सकता। कोई दैवी शक्ति का स्वामी, घमण्डी साधक लोगों को तरह-तरह के चमत्कार तो दिखा सकता है पर उनका मन नहीं जीत सकता, उनका प्रेमी नहीं बन सकता। प्रेमी तो वही महानुभाव हो सकता है जो महर्षि अरविन्द, स्वामी दयानन्द की तरह अपनी निरन्तर साधना और यत्न द्वारा प्रगति-पथ पर अग्रसर होता हुआ, आवश्यकतानुसार परिस्थिति, देश, काल और पात्रता देख कर लोक कल्याण करे। स्वामी विवेकानन्द की तरह अपनी दैवी शक्तियों का सदुपयोग कर, अपने समाज व राष्ट्र का मस्तिष्क ऊंचा करे।

जन साधारण का मन चाहे उसके विकारों या वासनाओं की दलदल में लिप्त रहने के कारण अशान्त रहे फिर भी वह एक सच्ची लगन, विश्वास युक्त अथक प्रयत्न, मेहनत से एक दिन अपना लक्ष्य पाने में सक्षम और समर्थ हो जाता है। राणा प्रताप जैसे राष्ट्र प्रेमी को अपने जीवन में कभी भी किसी प्रकार के महत्व पूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छोटी या बड़ी वस्तु का त्याग और अनगिनत बाधाओं और अत्याचारों का सामना भी करना पड़ता है।

दधीचि जैसा त्यागी, सत्पुरूष मृत्यु से नहीं डरता है। वह अपने जीवन को परहित में न्यौछावर कर देता है। निडरता, साहस, विश्वास, लगन और कड़ी मेहनत ही एक ऐसी अजेय जीवन-शक्ति है जिससे व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक शक्तियां प्राप्त करता है। जिस व्यक्ति में ये चारों शक्तियां भली प्रकार विकसित हों, उसके लिए राष्ट्र और समाज अपना है। अजेय चतुर्वाहिनी शक्ति को निरन्तर क्रियाशील बनाए रखने के लिए सादा जीवन उच्च विचार तथा कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता बनी रहती है। अजेय शक्ति व्यक्ति के हृदय को शुद्ध रखने से प्राप्त होती है। उसे अपना हृदय शुद्ध रखने के लिए सात्विक गुणों की आवश्यकता पड़ती है। सात्विक गुण उसके विशुद्ध विवेक से प्राप्त होते हैं। विशुद्ध विवेक व्यक्ति द्वारा प्रकृति के प्रत्येक कार्य-व्यवहार, वस्तु में ज्ञान खोजने से बनता है। वह ज्ञान पोषक है। तात्विक ज्ञान धारण करने वाला व्यक्ति सत्पुरूष ही पुरूषार्थी ज्ञानवीर धीर श्रीकृष्ण है। ज्ञान सत्य है और सत्य ही ज्ञान है। ज्ञानवीर व्यक्ति सत्पुरूष जल में कमल के पत्ते के समान प्रकृति में कार्य करता हुआ भी निर्लिप्त रहता है। उसी कारण जन साधारण मनुष्य अपनी विभिन्न दृष्टियों से दैवी गुण सम्पन्न साधक, सत्पुरूष को अपना नायक, रक्षक, मार्गदर्शक, युगनिर्माता, गुरू, दार्शनिक, योगी, सिद्ध, महात्मा और अवतार पुरूष भी मानते हैं। ❖

नक्सलवाद-एक मानसिक विचलन

-डॉ. उमेश कुमार पाठक

हमारा देश आज जिस गति से आगे बढ़ रहा है, वहां मानवता और भविष्य की संभावनाएं बार-बार क्यों हार रही हैं। यह सवाल बहुत सरल है, लेकिन इसका जवाब उतना ही मुश्किल। सुकुमा प्रकरण के आलोक में स्पष्ट तथ्यों के बावजूद भारत में नक्सलवाद की स्थिति को लेकर कुछ लोग झूठ फैलाने में बहुत हद तक सफल रहे हैं। नि:संदेह इसका प्रमुख कारण प्रायोजित तरीके से बहुत ही चालाकी के साथ भारत की विषमताओं के आवरण तले कुछ चयनित तथ्यों का लगातार दोहराव रहा है। यदि हम नक्सलवाद की पृष्ठभूमि, विस्तार व प्रभाव का सूक्ष्म अवलोकन करें तो यह सहज ही अनुभूत है कि नक्सलवाद के मूल में कहीं-न-कहीं 'मानसिक विचलन' का अध्ययन एवं विश्लेषण बेहद जरूरी हो जाता है। क्योंकि, सुकमा जैसे प्रकरण तो नक्सलवाद के सहज उत्पाद हैं।

छठे दशक के उत्तरार्द्ध व सातवें दशक के प्रारंभिक वर्षों में पं.बंगाल, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, बिहार आदि राज्यों में चरमपंथी विचारधारा से प्रेरित होकर नक्ससलवादियों ने भूमिहीन कृषक मजदूरों को संगठित कर तथाकथित भूमि संबंधों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने तथा वर्तमान शोषण को समाप्त करने हेतु हिंसक आतंकवादी कार्यशैली को अपनाया जिसके चलते उन क्षेत्रों में नक्सलवादी आतंकवाद का एक भीषण एवं आतंकवादी क्रूर चेहरा देखने को मिला। इसलिए सबसे पहले नक्सलवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है। 25 मई 1967 को प. बंगाल के दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी नामक स्थाान में क्रमश: चारू मजूमदार, कानू सान्याष्ल एवं टी. नागिरेड्डी जैसे चरमपंथी कम्युनिस्टों के नेतृत्व में घोर आर्थिक और सामाजिक विषमता, भूमि के असमान वितरण, सामंती शोषण मसलन जुल्म, अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ तथा उचित मजदूरी की मांग को लेकर तथाकथित 'किसान विद्रोह' प्रस्फुटित हुआ जिसे हम आज नक्सलवादी आंदोलन के नाम से जानते हैं। शीघ्र ही यह विद्रोह देश के पूर्वोतर राज्यों के साथ-साथ दूसरे भागों में भी फैल गया। उल्लेहखनी तथ्य यह भी है कि मार्क्स और लेनिन के वर्ग संघर्ष और माओ की क्रांतिकारी रक्त पात नीति से प्रेरित 'नक्सालवादी आंदोलन' इस विचारधारा पर आधारित है कि यदि अहिंसात्मक तरीके से विषमताओं का निवारण नहीं हुआ तो इसके सदस्यों को हिंसा का मार्ग अपनाने में भी कोई हिचक नहीं होगी। वैसे 'अहिंसात्मक तरीके' से इस आंदोलन का वास्ता कभी नहीं रहा। यह तथाकथित जनवादी तरीके से तथा आवश्यककता पड़ने पर हिंसा के माध्याम से व्यापक सामाजिक परिवर्तन चाहता है।

नक्सलवादी आंदोलन को एक समय में देश के अनेक जगहों पर व्यापक सफलता मिली जिससे इसकी लोकप्रियता में काफी वृद्धि हुई, विशेषकर गरीबों, शोषितों

एवं दलितों के बीच। इतना ही नहीं, कम्युनिस्ट यह भी मानते हैं कि भारत में नक्सलवादी आंदोलन का सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि इसके जनाधार वाले इलाके में गरीबों, दलितों एवं शोषितों के बीच चेतना एवं जागरूकता आई, जमींदारी प्रथा समाप्त हुई, आंशिक रूप से सामाजिक और आर्थिक विषमता दूर हुई। गैरमजरूआ और आवश्यकता से फालतू जमीनों पर भूमिहीनों को हक मिला। समाज में व्याप्त बुराइयों तथा दहेज प्रथा, नशीले पदार्थों की बिक्री, सरकारी भ्रष्टाचार, वेश्यावृत्ति, कमजोर व्यक्तियों पर जुल्म आदि बातों पर अंकुश लगाया गया।

इसके लिए नक्सली संगठन अपने जनाधार वाले इलाके में समानांतर सरकार चलाते हैं जिसमें जनता फरियाद लेकर जाती है। तदोपरांत संगठन की ओर से संचालित जन अदालत में मामले पर त्वरित एवं न्यातयोचित फैसला लिया जाता है तथा अभियुक्त को उसके दोष के आधार पर दंड दिया जाता है जिसमें मौत की सजा तक शामिल है। नक्सली आंदोलन संसदीय प्रणाली के खिलाफ है। हालांकि, नक्सली आंदोलन का एक घटक भाकपा 'माले' संसदीय चुनावों में भाग लेती है।

वैसे तो मार्क्स, लेनिन और माओ के विचारों से प्रेरित नक्सलवादी आंदोलन से जुड़े संगठन खुद को विषमताओं का विरोधी मानते हैं। लेकिन व्यवहारिक धरातल पर इनकी गतिविधियों में जातिवाद, गुटबंदी, समाज विरोधी एवं अनैतिक कार्यों तथा अपने जनाधार वाले इलाके में लूटपाट करना, बेवजह पुलिस बलों पर हमला कर हथियार लूटना, गरीब किसानों को तंग और तबाह करना, वैध एवं जायज जमीन पर नाकेबंदी तथा उनके समक्ष भुखमरी की स्थिति पैदा कर देना, निरीह एवं बेकसूर लोगों का नरसंहार करना, संबंधित इलाके में विकास संबंधी कार्यों मसलन पुल, पुलिया, सड़क, पंचायत भवन, विद्यालय भवन आदि के निर्माण कार्य में व्यवधान डालना एवं ठेकेदारों से अवैध रकम वसूलना इत्यादि प्रमुख हैं।

आतंकी क्रियाकलापों के सहारे आज नक्सलवाद पूरे भारत में कमोवेश किसी-न-किसी रूप में सक्रिय है, लेकिन सक्रियता में सर्वाधिक तीव्रता बिहार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, झारखंड, पं. बंगाल, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ में विशेष रूप से देखी जा सकती है। एक गैर सरकारी संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक आज नक्सलवाद देश के लगभग 200 से भी अधिक जिलों में अपनी गहरी पैठ बना चुका है जिसमें तकरीबन 60 जिले तो जैसा कि गृह मंत्रालय, भारत सरकार का भी मानना है, नक्सलवाद से बुरी तरह प्रभावित हैं। इस तरह भारत का लगभग एक तिहाई भौगोलिक क्षेत्र इनकी जकड़ में है जिसे आमतौर पर 'नक्सलाइट बेल्ट' के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे देश में नक्सलवाद आंतरिक सुरक्षा के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है। यह विभिन्न रूपों में व्याप्त है जो हमारे लोकतंत्र पर भी कुठाराघात करता है। नक्सलवाद को पनपाने में जिन कारणों का योगदान रहा है, उनमें अशिक्षा, बेरोजगारी, सरकारी तंत्र में विश्वास न होना, समानांतर सरकार की आकंक्षा आदि जैसे कारण विशेष हैं। इतना ही नहीं, कुछेक कम्युनिस्ट राजनेताओं का भी इनको समर्थन मिलता रहा है। नक्सलवाद को बढ़ावा देने में नक्सलवादियों को प्राप्त विदेशी सहायता, संरक्षण और प्रशिक्षण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अब तो नक्सकलवादियों को चीनी समर्थन व सहायता के साथ-साथ उन्हें न प्रशिक्षित करने में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई. एस. आई., नेपाली माओवादी और कुछ आर्मी से बर्खास्त किए हुए आंतरिक लोग शामिल हैं।

एक गैर सरकारी संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक आज नक्सलवाद देश के लगभग 200 से भी अधिक जिलों में अपनी गहरी पैठ बना चुका है जिसमें तकरीबन 60 जिले तो जैसा कि गृह मंत्रालय, भारत सरकार का भी मानना है, नक्सलवाद से बुरी तरह प्रभावित हैं। इस तरह भारत का लगभग एक तिहाई भौगोलिक क्षेत्र इनकी जकड़ में है जिसे आमतौर पर 'नक्सलाइट बेल्ट' के नाम से जाना जाता है।

इस संदर्भ में लगभग पचास हजार से भी अधिक आर्मड प्रशिक्षित माओवादी सक्रिय हैं। दरअसल ये चीनी मार्क्सवाद के जनक माओ जिंदोंग मासलाइन कम्युनिकेशन के प्रणेता को अपना आदर्श मानते हैं और गुरिल्ला युद्ध तकनीकी का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इनके समूह में बच्चे, बूढ़े, युवा, महिला, पुरूष सभी शामिल होते हैं। हमले के बाद प्राय: ये लूटपाट को अंजाम देते हैं। इनकी सक्रियता के लिए समाज की मुख्यधारा से अलगाव, क्षेत्रीय पिछड़ेपन, घने जंगलों से आवृत क्षेत्र, ठोस पहचान का अभाव, राजनीतिक-प्रशासनिक गुटबंदी आदि को उत्तरदायी माना जा सकता है।

चूंकि, नक्सलवादी हमारे देश के भ्रमित व भटके हुए नागरिक हैं इसलिए हमारा पहला व्यक्तिगत और सामूहिक लक्ष्य उन्हें देश की मुख्यधारा से जोड़ने का है ताकि वे राष्ट्रीय एकता व अखंडता में समरस होकर केंद्र बिंदु 'सबका साथ-सबका विकास' नीति के स्फल व समन्वित क्रियान्वयन में अपनी सार्थक सहभागिता वहन कर सकें। सर्वविदित है कि भारत सरकार ने नक्सालवादियों को देश की मुख्यधारा में वापस लाने के लिए द्वि-सूत्री नीति को अपनाया था जिसमें जहां एक ओर नक्सलवादी क्षेत्रों में आधारभूत संरचनाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार व रोजगार के साधनों का निर्माण करना था, वहीं दूसरी ओर कानून व्यवस्था को बेहतर एवं प्रभावी ढंग से लागू करना था। जैसा कि सुकमा हमले के उपरांत गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने भी यह स्वीाकार किया है कि अभी भारतीय सेना को नक्सलवादी इलाकों में सक्रिय करने का समय नहीं है। फिर भी नक्सलवाद आज राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए बेहद गंभीर विषय बन चुका है और समय रहते हमें शीघ्र ही इस 'मानसिक विचलन' 'नक्सलवाद' का सरकारी और गैरसरकारी कारगर समाधान निकालना होगा और ऐसे राष्ट्रीय व सामाजिक दायित्व निर्वहन में विविध आयामी कार्यक्रम व मार्गदर्शन बेहद असरकारी साबित हो सकते हैं।❖

लेखक पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वद्यालय क्षेत्रीय केंद्र, धर्मशाला से सम्बद्ध हैं।

सुकमा में नक्सली हमले से धरती लाल

छत्तीसगढ़ के सुकमा में नक्सली हमले में सीआरपीफ के पच्चीस जवान शहीद हो गए जबकि, छह जवान जख्मी हुए। बताया जा रहा है कि, सुकमा के बुरकापाल-चिंतागुफा इलाके में दोपहर 12 बजकर 25 मिनट पर सीआरपीफ की पेट्रोलिंग पार्टी पर 300 से ज्यादा नक्सलियों ने घात लगाकर ये हमला किया।

जिस जगह ये हमला हुआ है वो इलाका घने जंगलों से घिरा हुआ है। घायल जवानों को हेलिकॉप्टर के जरिए इलाज के लिए रायपुर लाया गया। शहीद सभी जवान सीआरपीफ की 74वीं बटालियन के हैं। फरार नक्सिलयों की तलाश के लिए कोबरा कमांडो के जवानों काम्बिंग ऑपरेशन किया।

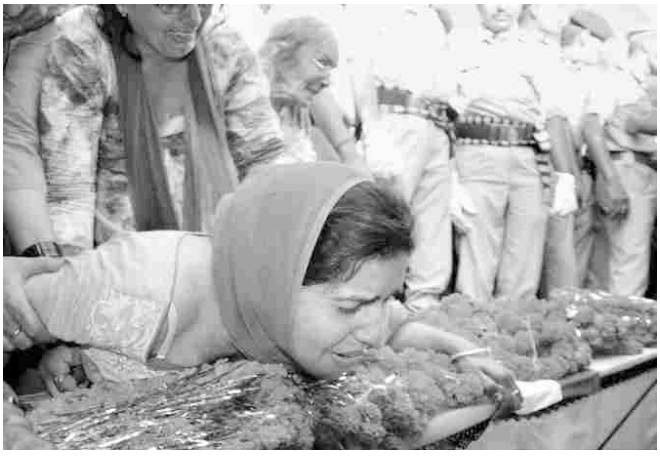

हेलिकॉप्टर के जरिए घायल जवानों को इलाज के लिए रायपुर लाया गया। घटना के बाद राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने एक आपात बैठक बुलाई। दिल्ली में केंद्रीय गृह सचिव ने भी इस मसले पर बैठक बुलाई है। नक्सली हमले के बाद बस्तर के आईजी विवेकानंद सिन्हा और डीआईजी सुंदर राज ने सुकमा घटनास्थल पर तुरंत पहुँचकर जवानों के मनोबल बढाने का प्रयास किया और प्रत्युत्तर की प्रभावी योजना बनाई जिसके पन्द्रह दिन पश्चात् ही बीस नक्सलियों को मौत के घाट उतारकर सुकमा हमले में मारे गये जवानों के बलिदान का बदला ले लिया। सीआरपीफ के जवानों की इस प्रत्युत्तर की कार्यवाही से बल का मनोबल बढा है और और खासकर देश के नागरिक प्रसन्न हैं।

छत्तीसगढ़ नक्सली हमले में 25 जवान शहीद

खाना खाने की तैयारी कर रहे सीआरपीफ के गश्ती दल पर घात लगाकर नक्सलियों ने किया हमला, जवाबी फायरिंग में भी मारे गए दस नक्सली

सीआरपीएफ के घायल जवान शेख मोहम्मद ने बताया कि नक्सलियों ने एक ग्रामीण की मदद से रेकी की और फिर करीब 300 की संख्या में आकर हम पर हमला कर दिया। हमले में महिला नक्सली भी शामिल थीं।

सुकमा में ही होते हैं बड़े हमले

* सुकमा वही इलाका है, जहां 2010 में नक्सली हमले में 76 जवान शहीद हो गए थे। नक्सली जवानों के हथियार भी लूट ले गए थे।
* 11 मार्च को भी नक्सलियों ने इसी इलाके में सीआरपीएफ जवानों पर हमला किया था। इस हमले में 12 जवान शहीद हो गए थे।

हमले में मंडी का जवान भी शहीद

छत्तीसगढ़ में सीआरपीएफ की 74वीं बटालियन के जवानों पर हुए हमले में हिमाचली जवान ने भी शहादत दी है। मंडी जिला के नेरचौक के रहने वाले सुरेन्द्र ठाकुर (33) सोमवार को छत्तीसगढ़ के सुकमा में हुए नक्सली हमले में शहीद हो गए। सुरेंद्र ठाकुर अपने पीछे माता, पत्नी और एक तीन साल की बेटी छोड़ गए हैं।❖

साभार:- अमर उजाला

सकारात्मक समाज के लिए निष्पक्षता से काम करें पत्रकार

शिमला(विसंके)। सकारात्मक समाज के निर्माण में पत्रकार की भूमिका एक निर्देशक की है, ऐसे में देश को दिशा देने के लिए पत्रकारों को निष्पक्षता से काम करना होगा। उन्होंने एजेंडे के तहत चलने वाली पत्रकारिता को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा कि आज की पत्रकारिता का स्वरूप नकारात्मक होता जा रहा है यह विचार नारद जयंती के अवसर पर मुख्य वक्ता नरेंद्र कुमार ने व्यक्त किये। नारद जयंती के अवसर पर शिमला में पत्रकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी एवं पूर्व निदेशक सूचना एवं जनसंपर्क हिमाचल प्रदेश डॉ0 एम.पी. सूद उपस्थित रहे जबकि मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र कुमार रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दूरदर्शन शिमला की सहायक निदेशक श्रीमती नंदिनी मितल ने की। अपने उद्‌बोधन में नरेंद्र कुमार ने कहा कि मीडिया दुर्भाग्य से नकारात्मक खबरों को ही अधिक प्राथमिकता देता है। उनका कहना था कि अभी लोग जेएनयू की घटना को नहीं भूले हैं जिसमें भारत के टुकड़े करने के लिए नारेबाजी हुई और संसद पर हमले के मुख्य आरोपी याकूब मेनन की बरसी मनायी गयी थी। उस घटना को मीडिया में इस प्रकार प्रचारित किया गया मानो अभिव्यक्ति की आजादी पर एक बड़ा संकट खड़ा हो गया हो। वहीं दूसरी ओर अभी हाल ही उसी विश्वविद्यालय में सुकमा में मारे गये 25 सीआरपीफ के जवानों के सम्मान में श्रद्धाजंलि का कार्यक्रम रखा गया तो उस कार्यक्रम के संयोजक प्रोफेसर पर पथराव किया गया। इसके साथ ही उनको जान से मारने की धमकियां भी दी गयीं लेकिन दुख की बात है कि मीडिया में इस खबर को तवज्जो नहीं दी गयी। उन्होंने लोकप्रिय मीडिया के एक भाग सिनेमा के बारे बताया कि देशभक्ति और राष्ट्रवादी विचारों को आधार में रखकर ही फिल्म निर्माण किया जाये ताकि लोग समाज निर्माण की दिशा में काम कर पाये । उन्होंने सिनेमा के दोषों पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि आज नारद जैसे विद्वान, दार्शनिक और दूरदर्शी पत्रकार को भी सिनेमा में एक हंसी मजाक और चुगलखोर की तरह बना दिया है। उन्होंने मीडिया के सभी स्तंभों से आग्रह किया वे समाज को सही राह दिखाने के लिए अपनी निर्णायक भूमिका तय करें जिससे भारत की सही छवि को विश्व के सामने प्रस्तुत किया जा सके।

मुख्य अतिथि डॉ0 एम.पी. सूद ने कहा कि नारद समाज में सूचनाओं को लोक हित में संप्रेषण के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने जानकारी दी कि भारत का पहला साप्ताहिक उदंत मार्तंड 30 मई 1826 को निकाला गया था वह दिन भारतीय पत्रकारिता के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण

था। उस दिन नारद जयंती थी और यह संयोग नहीं था बल्कि आदि पत्रकार नारद के प्रति सम्मान का प्रकटीकरण था जिसके उपर देश की पत्रकारिता की कहानी लिखी गयी। उन्होंने राजनीतिक विद्वेषों के लिए पत्रकारिता के इस्तेमाल पर खेद जताया। उन्होंने महिला पत्रकारों से आह्वान किया कि वे पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दें जिससे समाज में महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को दूर किया जा सके।

कार्यक्रम अध्यक्ष नंदिनी मित्तल ने कहा कि आज हर पत्रकार को इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि उनके द्वारा प्रेषित समाचार का पाठकों पर क्या असर पड़ रहा है। अगर पाठकों व समाज पर किसी समाचार का नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है तो उसका दायित्व भी पत्रकार को समझना होगा। उन्होंने पत्रकारिता के बारे में अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि आज 24 घंटे के चैनलों की होड़ में किसी समाचार पर अध्ययन करने का समय ही नहीं है। किसी विशेष घटना जिस पर किसी का ध्यान न जाये और वह समाज के लिए हितकर हो ऐसी पत्रकारिता विलुप्त होती जा रही है।

ये पत्रकार किये गये सम्मानित- वरिष्ठ पत्रकार वर्ग में दैनिक जागरण के नालागढ़ से संवाददाता ओमपाल सिंह को पुरस्कृत किया गया जबकि महिला पत्रकार वर्ग में दिव्य हिमाचल की कुल्लु जिला से पत्रकार शालिनी रॉय भारद्वाज को पुरस्कृत किया गया। वहीं युवा वर्ग में अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए पंजाब-केसरी के अनिल भारद्वाज (हैडली) को पुरस्कार दिया गया। वीडियो जर्नलिस्ट के लिए दूरदर्शन शिमला के सुभाष शर्मा और फोटो जर्नलिज्म के लिए दिव्य हिमाचल के लिए काम कर रहे विक्रम बधान को पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम में प्रांत प्रचारक संजीवन कुमार, विरेंद्र सिपहिया, प्रांत प्रचार प्रमुख महीधर प्रसाद व एपीजी विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ0 रमेश चौहान और विद्यार्थियों सहित भारी संख्या में पत्रकारों उपस्थित रहे। ❖

आर्मी ट्रेनिंग कमांड शिमला तथा विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी, शाखा शिमला

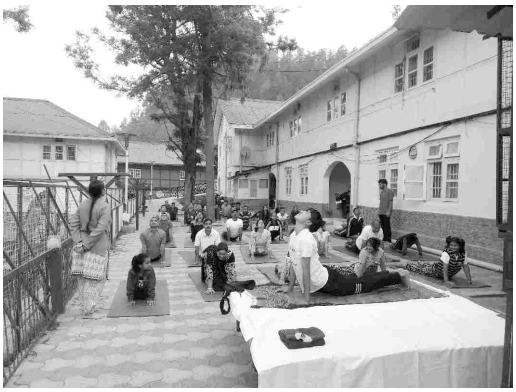

आर्मी ट्रेनिंग शिमला तथा विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी द्वारा एम् आई रूम समरहिल (शिमला) में एक सात दिवसीय योग शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर 08-05-2017 से 14-05-2017 तक प्रातः 5.30 से 6.30 तक लगाया गया। इस शिविर में योग सम्बंधित निम्न विषयों पर विशेष बल दिया जा रहा है।

1. शिथिलीकरण विधि?
2. सूर्यनमस्कार
3. आसन
4. प्राणायाम
5. योग की अवधारणा

इस शिविर में लगभग 40 लोग भाग ले रहे हैं।

विवेकनन्द केन्द्र द्वारा आने वाले दिनों में दस दिवसीय आवासीय योग शिविर का आयोजन कश्मीर में 15 से 25 जुलाई 2017 तक केन्द्र के नागदण्डी आश्रम में (अच्छाबल गाँव, अनंतनाग) आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर की पूर्ण जानकारी तथा भाग लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन vkendra.org पे जाएं अथवा शिविर प्रभारी से मो.न. 94180-15995 पर संपर्क कर सकते हैं। ❖

धन्य! धन्य!! महन्त महेश दास

जिला कांगड़ा के नृसिंह मंदिर फत्तेहपुर के पूज्य महन्त महेशदास जी स्वर्ग सिधार गए हैं। वे पूज्य व लोकप्रिय महन्त थे। लाखों लोग उनके प्रति श्रद्धा रखते थे। वे 106 वर्ष के थे। विश्व हिन्दु परिषद से भी उनका गहरा नाता था। मंदिर में गऊशाला व पाठशाला भी खोल रखी थीं उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए काव्य रचना-

धन्य! धन्य!! महन्त महेश दास
धन्य! धन्य!! महन्त महेश दास,
सबके मन में करते वास।
बाल ब्रह्मचारी तुम कहलाए,
यश, कीर्ति व मान बढ़ाए।
कर्त्तव्यनिष्ठ बन दिया संदेश,
सर्वोपरि समझा अपना देश।
किया धर्म-कर्म का पालन,
रहे सदा ही तुम मनभावन।
मधुर वाणी ही बोले तुम,
सत्य-पथ पर नित डोले तुम।
हिन्दुत्व को गले लगाया,
प्रेम का ही पाठ पढ़ाया।
कौन होगा तुम-सा चरित्रवान?
रखी देश व धर्म की आन।
कांगड़ा जनपद के अन्दर,
फत्तेहपुर का नृसिंह मंदिर।
उन्नति के शिखर पहुंचाया,
ऐसी अद्भुत तुम्हारी माया।
कहे 'प्रसाद' रिश्ते-नाते,
श्रद्धांजलि दे आदर पाते।

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'
सिहाल, कांगड़ा (हि.प्र.

एक कर्मयोगी का अवसान

सेवा भारती मण्डी, हिमाचल प्रदेश में लम्बे समय तक अपने सेवाएँ देने वाले स्व॰ श्री पन्ना लाल का देहांत 18 मई, 2017 को 87 वर्ष की आयु में हो गया। क्षेत्रीय चिकित्सालय मण्डी में सेवा भारती को रोगियों की सेवा के लिए एक प्रकल्प के आधार पर कार्यालय का स्थान मिला हुआ है। सेवा भारती मण्डी की स्थापना से लेकर आपका बहुमूल्य योगदान रहा। सेवानिवृत्ति के बाद आपका पूरा समय चिकित्सालय में रोगियों एवं उनके सहायकों की सेवा में व्यतीत होता था। आप क्षेत्र में निर्धन, असहाय एवं उपेक्षितों की सेवा सुश्रुषा के लिए प्रसिद्ध थे। कर्तव्यनिष्ठ एवं सेवाभावी पन्ना लाल जी को मातृवन्दना संस्थान की विनम्र श्रद्धांजलि। ❖

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

जी.एस.टी. के तहत हटेंगे राज्यों के चैकपोस्ट

पहली जुलाई से वस्तु एवं सेवा कर (जी.एस.टी.) लागू होने के बाद माल की आवाजाही पर टैक्स वसूली के लिए बने राज्यों के चैकपोस्ट हट जाएंगे। राजस्व सचिव हसमुख आधिया ने साफ कहा कि जी.एस.टी. के तहत इनकी जरूरत नहीं रह जाएगी। अलबत्ता, आबकारी शुल्क वसूली केंद्र (कलैक्शन प्वाइंट) बने रह सकते हैं। इसकी वजह यह है कि ये शराब पर लगने वाले राज्य के टैक्स की वसूली से जुड़े हुए हैं। उल्लेखनीय है कि अल्कोहॉल (शराब) और पैट्रोलियम उत्पाद जी.एस.टी. के दायरे से बाहर हैं। आधिया ने 'इंडिया इंटीग्रेटेड ट्रांसपोर्ट एंड लॉजिस्टिक्स समिट 2017' के समापन समारोह में कहा, जी.एस.टी. के तहत टैक्स दरें समान होंगी इसलिए किसी राज्य के अंदर या बाहर माल की आवाजाही के लिए इस बात की जांच की जरूरत नहीं है कि क्या वह सामान वास्तव में राज्य के बाहर गया अथवा नहीं। ❖

मुस्लिम परिवार ने बेटी को शादी में दान दी गाय

सोनीपत जिले के खरखौदा में मुस्लिम समुदाय के एक परिवार ने बेटी की शादी पर गाय दान में दी है। नूरखान का कहना है कि उसकी बेटी को गायों से बहुत प्यार है और उसके घर पर गाय बांधने की जगह भी नहीं थी लेकिन उसने अपनी बेटी से गाय दान करने का वादा किया था जो उसने पूरा कर दिया। नूर खान ने रिवाज के अनुसार बेटी की शादी करवाई और बाद में स्वामी गोपालदास को बुला कर एक गाय भी दान की। संत गोपाल दास ने नूर खान की इस पहल की तारीफ करते हुए कहा कि ऐसा काम करने से समाज में जो मुस्लिम समुदाय की तस्वीर सामने आती थी, इससे कहीं न कहीं लोगों का नजरिया जरूर बदलेगा और सभी की सोच में भी फर्क पड़ेगा। ❖

सरस्वती विद्या मन्दिर कुमारसैन का दसवीं और बारहवीं का परिणाम शानदार रहा

सरस्वती विद्या मंदिर कुमारसैन का दसवीं और +2 कक्षा का परीक्षा परिणाम शानदार रहा। +2 कक्षा की छात्र अमीशा भारद्वाज ने 454/500 अंक लेकर प्रथम स्थान सुकन्या और कण्व ने 449/500 अंक लेकर दूसरा स्थान, कशिश खाची ने 430/500 अंक लेकर तीसरा स्थान तथा तान्या ने 428/500 व शालिनी ने 426/500 अंक लेकर चौथा व पांचवा स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के सभी छात्र प्रथम श्रेणी में उतीर्ण हुए। दसवीं कक्षा में विद्यालय की छात्र मुस्कान ने 667/700 अंक लेकर पहला प्रांजल सेठी और साक्षी गौतम ने 665/700 अंक लेकर दूसरा और गुंजल ठाकुर ने 657/700 अंक लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस के अतिरिक्त मिनाक्षी ने 628/700, शिवांगी ने 624/700, प्रीति भारद्वाज 606/700 और रितिक शर्मा ने 601/700 अंक प्राप्त किये। विद्यालय के सभी छात्रों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उतीर्ण की। विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रीतम सेठी विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष अश्वनी सोनी प्रबंधक श्री प्रवीण गौतम ने छात्रों की इस उपलब्धि पर छात्रों, अध्यापकों तथा अभिभावकों को बधाई दी और इसका श्रेय विद्यालय के संस्कारात्मक वातावरण और परिश्रमी अध्यापकों को दिया।❖

देव संस्कृति रक्षा मंच द्वारा इसाईयों की धर्मान्तरण करने की योजना हुई विफल

शिमला जिले के रामपुर में अमेरिका से इसाई पादरी मार्ग एन्डरसन एक चंगाई सभा के लिए विशेष रूप से पहुंचे थे। पिछले कई वर्षों से मिशनरीज़ का हिमाचल के दूर दराज के क्षेत्रों में वहाँ के समाज को प्रलोभन देकर व आस्था के प्रति नकारात्मकता फैलाकर धर्मान्तरण का कुचक्र चल रहा है। इसी कड़ी में रामपुर में धर्मान्तरित हिन्दु जो प्रलोभन के द्वारा इसाई मत को अपना चुके हैं उनकी एक सभा आयोजित होने वाली थी। वास्तव में तो यह चंगाई सभा एक सुनियोजित तरीके से पहाड़ी क्षेत्र के भोले-भाले निवासियों को अपने पूर्वजों, महापुरूषों व मानबिन्दुओं के प्रति नफरत की भावना फैलाकर इसाई मत में परिवर्तन का एक बड़ा माध्यम है। हिमाचल प्रदेश की पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार द्वारा धर्मान्तरण को अवैध ठहराया गया है। इस कार्यक्रम में प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह को भी आमन्त्रित किया गया था। किन्तु देव संस्कृति रक्षा मंच एवं स्थानीय हिन्दु समुदाय द्वारा इसका प्रचण्ड विरोध देखकर यह कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया। गौरतलब है कि इसाईयों द्वारा स्थानीय राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (बाल) के प्रधानाचार्य से लिखित में कार्यक्रम करने की अनुमति ली गई थी, और उन्हें अनुमति भी प्राप्त हो गई थी।

आयोजन का विरोध कर रहे देव संस्कृति रक्षा मंच के लोगों ने स्थानीय जनता के साथ एन.एच.-5 को एक घण्टे के लिए जाम कर दिया। मंच का आरोप है कि इसाई समुदाय के लोग हिन्दुओं का जबरन धर्मान्तरण करवा रहे थे। इसे वे किसी भी कीमत पर नहीं होने देगें और इसाई समुदाय को स्कूल में प्रार्थना नहीं करने देगें। स्कूल प्रधानाचार्य ने कार्यक्रम करवाने की अनुमति कैसे दे दी? इसकी जाँच की जाएगी। ऐसे कार्यक्रमों की अनुमति नहीं दी जा सकती, इस मामले पर जाँच जरूर होगी। किसी भी शैक्षणिक संस्थान में चंगाई सभा करने या धर्मान्तरण के कुत्सित प्रयासों को अनुमति नहीं होती तथा यह गैर कानूनी है। शिमला जिले के उपायुक्त ने देव संस्कृति रक्षा मंच और स्थानीय हिन्दु समाज के विरोध की स्थिति को भांपकर मामले पर अपनी सफाई दी और कहा कि किसी भी सरकारी संस्थान में इसाई पादरी को चंगाई सभा या धर्मान्तरण का कोई भी काम करने की अनुमति नहीं है। इसाई पादरी मार्क एन्डरसन को स्थानीय लोगों का विरोध देखकर उल्टे पाँव भागना पड़ा व उसकी भोले भाले लोगों को धर्मान्तरित करने की योजना धरी की धरी रह गई। आगे भी उसकी प्रदेश के अन्य स्थानों में कार्यक्रम करने की योजना बनी हुई थी जिसमें धर्मशाला, जसूर, नूरपुर आदि स्थानों पर हिन्दु संगठनों के प्रचण्ड विरोध स्वरूप सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिए गए। ❖

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

श्री पंचानन महादेव गुफा

श्री पंचानन महादेव शिव गुफा हिमाचल प्रदेश के अर्की क्षेत्र में दाड़लाघाट पंचायत के काकड़ा नामक ग्राम के नजदीक स्थित है। गुफा लगभग 2500 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। जिसमें पवित्र शिवलिंग के रूप में भगवान शिव पंचानन रूप विराजमान है। क्षेत्र के जाने माने संत बाबा अलखिया धुन्दनेश्वर मठ के संस्थापक ने यहां भगवान शिव के पंचानन रूप के होने की पुष्टी की थी। पवित्र गुफा में जाने का मार्ग संकरा एवं पहाड़ी ढलान पर दुर्गम है। गुफा का प्रवेश द्वार काफी संकरा है तथा प्रवेश द्वार पर सदैव एक नाग समीप के छिद्र में विराजमान द्वारपाल की तरह दर्शन देता है। गुफा लगभग 30 फीट लंबी है तथा आन्तरिक भाग 10-12 फीट ऊंचा है। गुफा में भगवान भोलेनाथ पंचानन शिवलिंग रूप में एवं साथ में भगवान श्री गणेश, भगवती मां पार्वती, भगवान कार्तिकेय पवित्र पिंडी रूप में विराजमान है। भगवान शिव के परिवार के यह दर्शन मन को आनन्दित करने वाला है, साथ ही गुफा में शिव के प्रिय नंदी एंव शिव गण प्रतीक रूपों में विद्यमान है। गुफा के इतिहास की कई किवदिन्तयां है जो बुजुर्गों से सुनने में आती रही। एक कन्या को इस निर्जन वन में भगवान शिव के दूर से दर्शन हुए तथा कन्या ने समीप पहुंच के देखा तो गुफा दिखाई दी, कन्या ने हिम्मत कर गुफा में प्रवेश किया तो चमकता शिवलिंग एवं शिव परिवार के पिंडी रूप में दर्शन किए। किवदन्तियों में सबसे विश्वसनीय किमवदन्ती है कि स्थानीय चरवाहे को लगभग 300 वर्ष पूर्व वन में पशु चराते आंख लग गई एवं स्वप्न में उसे भगवान शिव का गुफा में विराजमान होने का साक्षात्कार हुआ, शिवभक्त चरवाहे की तत्क्षण आंख खुली तथा उसने गुफा के प्रवेश पर से चट्टान को गिरा कर गुफा के अन्दर प्रवेश किया जहां उसने स्वपन में दिखाई दिए शिवलिंग के दर्शन को सही पाया। कहा जाता है कि शिवलिंग पर स्वत: गिरती दूध की बूंदे अभिषेक करती रहती थी, किन्तु अपवित्रता के कारण वो दूध की बूंदे विलुप्त हो गई।

भगवान शिव की महिमा अपरम्पार है। इस पवित्र गुफा में जो मुराद मांगी जाए भगवान शिव उसे अवश्य ही पूरी करते हैं। महाशिवरात्रि के दिन यहां दूर-दूर से भक्त एवं शैव संप्रदाय के अनुयायी दर्शन के लिए आते हैं तथा भगवान भोलेनाथ एवं शिव परिवार से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। वर्ष में वैसे यह स्थान निर्जन प्रतीत होता है। शिवगुफा एकांत वन में स्थित है एवं पूर्णत: प्राकृतिक है। हिमाचल की शिवालिक पर्वत श्रेणी में स्थित यह स्थान अति रमणीय एवं शिवभक्ति बढ़ाने वाला है। गुफा जिला सोलन तहसील अर्की के एनएच 88 पर स्थित दाडलाघाट से 2 कि.मी. दूरी पर काकड़ा ग्राम में स्थित है। जहां अपने निजी वाहन एवं दाड़लाघाट-पिपलुघाट लिंक रोड़ पर बस सेवा से आया जा सकता है। हर शिवभक्त को एक बार इस पवित्र स्थान के दर्शन अवश्य करने चाहिए तथा भगवान शिव का आशीर्वाद लेना चाहिए। ❖

भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय सचिव बने सुरेन्द्र ठाकुर

प्रदेश के छोटे से गांव के रहने वाले कर्मचारी नेता को राष्ट्रीय स्तर पर मिला बडा दायित्व दुनिया के सबसे बडे मजदूर संगठन ने इस बार हिमाचल प्रदेश को नेतृत्व प्रदान यिा है। प्रदेश के सोलन जिला के अर्की विधानसभा क्षेत्र के छोटे से गांव से रहने वाले सुरेन्द्र ठाकुर को अखिल भारतीय मजदूर संघ में राष्ट्रीय सचिव का दायित्य मिला है। इससे पहले प्रदेश में किसी भी व्यक्ति को अखिल भारतीय स्तर पर यह दायित्व नहीं मिला है। उत्तर प्रदेश के कानपुर में आयोजित अखिल भारतीय मजदूर संघ के अधिवेशन में बुधवार को उन्हें राष्ट्रीय सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई है। सुरेन्द्र ठाकुर वर्तमान में हिमाचल प्रदेश अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ के प्रदेशाप्रयक्ष का दायित्व भी निभा चुके हैं। इसके पूर्व वह मजदूर संघ के प्रदेशाध्यक्ष का दायित्व भी निभा चुके हैं। ठाकुर के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर अर्की क्षेत्र सहित प्रदेश में उनके प्रशंसकों ने खुशी जाहिर की है। पूर्व कर्मचारी नेता दिलीप सिंह चौहान, एन.आर.ठाकुर, गोपाल झिल्टा, दिनेश शर्मा, महेश शर्मा, शंकर लाल ठाकुर सुरेश शर्मा और सुरेन्द्र के पिता परसराम ठाकुर ने उन्हें इस दायित्व को मिलने पर शुभकामनाएं दी हैं। सुरेन्द्र ठाकुर से हुई बातचीत पर उन्होंने कहा कि देश के राष्ट्रीय नेतृत्व ने उन्हें जो जिम्मेदारी दी है उसे वह पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निभाएंगे। ❖

सरस्वती विद्या मन्दिर के छात्रों ने कायम की श्रेष्ठता

हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा संचालित सरस्वती विद्या मन्दिरों के छात्रें ने बोर्ड द्वारा मार्च 2016 में ली गई 10वीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा के परिणाम में प्रदेश मैरिट सूची में अपनी श्रेष्ठता कायम की है। बोर्ड द्वारा जारी मैरिट सूची में समिति द्वारा संचालित सरस्वती विद्या मन्दिर घुमारवीं की छात्र अक्षिमा ठाकुर ने 690 अंक प्राप्त कर प्रदेश में पहला स्थान प्राप्त किया। सरस्वती विद्या मन्दिर रौड़ा सैक्टर बिलासपुर के छात्र कमलप्रीत सिंह ने 685 अंक प्राप्त कर पांचवां, सरस्वती विद्या मन्दिर चिन्तपूर्णी की छात्र निकिता कालिया और सरस्वती विद्या मन्दिर आनी की छात्र युक्ति ठाकुर ने 682 अंक प्राप्त की प्रदेश भर में आठवां स्थान प्राप्त किया। हिमाचल शिक्षा समिति के पदाधिकारियों ने सभी छात्रें को इस उत्कृष्ट उपलब्धिा के लिए हार्दिक बधाई दी। ज्ञात रहे पूर्व वर्ष में भी सरस्वती विद्या मन्दिर घुमारवीं की छात्र उर्वशी ने प्रदेश मैरिट में पहला स्थान व पलक शर्मा ने दूसरा स्थान प्राप्त किया था। हिमाचल शिक्षा समिति मैरिट में आये सभी छात्रों का सम्मान करेगी। ❖

कश्मीर और केंद्र सरकार

कश्मीर की हालात जिस तरह दिन-प्रतिदिन खराब होते नजर आ रहे हैं उसे देखते हुए केंद्र सरकार को वहां कुछ करना ही होगा। उसे एक ओर जहां सीमा पार आतंकवाद को रोकने के मामले में कोई कड़े कदम उठाने होंगे वहीं सीमा के अंदर हालात संभालने के लिए भी सक्रियता दिखानी होगी। कश्मीर में केंद्र सरकार की सक्रियता की दरकार इसलिए और भी है, क्योंकि भाजपा के समर्थन वाली महबूबा मुफ्ती सरकार ततिक भी प्रभावी सिद्ध नहीं हो पा रही है। महबूबा मुफ्ती के पास ले-देकर यही सुझाव है कि भारत सरकार को कश्मीर से सभी पक्षों से बात करनी चाहिए। सभी पक्षों से उनका आशय हुर्रियत कांफ्रेंस सीखे पाकिस्तान परस्त संगठनों से भी है। आखिर आतंकियों का खुला समर्थन करने के साथ ही आजादी की बेतुकी मांग करने वाले किसी भी संगठन के साथ बात क्यों की जानी चाहिए? इसमें काई दो राय नहीं कि बतौर मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती का अब तक का कार्यकाल निराशाजनक रहा है। उनकी न तो घाटी के लोगों पर कोई पकड़ नजर आ रही है और न ही पुलिस प्रशासन पर। शायद इसकी एक बड़ी वजह यह है कि खुद उनके दल-पीडीपी के कई नेता अलगाववादी तत्वों के समर्थक और संरक्षक हैं।

पत्थरबाजी की बढ़ती घटनाएं भी यही बताती हैं कि हिंसा फैलाने वाले तत्वों को मुख्यधारा के राजनीतिक दल बढ़ावा दे रहे हैं। इसका प्रमाण यह है कि नेशनल कांफ्रेंस के बड़े नेता भी पत्थरबाजों की खुली हिमायत करने में लगे हुए हैं। नि:संदेह कश्मीर में सभी न तो पत्थरबाज हैं और न ही पाकिस्तान के समर्थक, लेकिन उन्हें नेतृत्व देने वाला या फिर उनकी आवाज सुनने वाला कोई नहीं। कम से कम भारत सरकार को तो किसी जतन से ऐसे लोगों तक पहुंचना ही चाहिए।

केंद्र सरकार केवल यह कह कर कर्तव्य की इतिश्री नहीं कर सकती कि पाकिस्तान कश्मीर की हालात को बिगाड़ने में लगा हुआ है। पाकिस्तान यह काम न जाने कब से कर रहा है और अब तो ऐसा लगता है कि वहां की सेना नवाज शरीफ सरकार को यह दिखाने पर तुल गई है कि कश्मीर के मामले में वहीं होगा जो वह चाहेगी। पनामा कांड में उलझने के बाद नवाज शरीफ राजनीतिक तौर पर इतने दुर्बल नजर आने लगे हैं कि भारत उनसे कोई उम्मीद नहीं कर सकता।

मौजूदा हालात में पाकिस्तान से बात करने का न तो कोई औचित्य बनता है और न ही उससे कोई लाभ मिलने वाला है। जब कश्मीर में पाकिस्तानी सेना की दखलंदाजी बढ़ती जा रही हो और महबूबा मुफ्ती सरकार निष्प्रभावी साबित हो रही हो तब भारत सरकार हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठ सकती। कम से कम उसे यह तो सुनिश्चित करना ही चाहिए कि अलगाववादी एवं पाकिस्तान परस्त तत्वों को मनमानी करने से बाज आएं। यदि ऐसे तत्वों से बात नहीं करनी तो फिर उन्हें सक्रिय रहने की छूट देने का क्या मतलब? सवाल यह भी है कि कश्मीर में तैनात सेना एवं अर्द्धसैनिक बलों को ही सारी हिदायत क्यों दी जा रही है?आतंकियों से निपटने के मामले में सेना और अर्द्धसैनिक बलों को न केवल पर्याप्त अधिकार दिए जाने चाहिए, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कोई भी उनके मान-सम्मान से खेलने न पाए। ❖

साभार: दैनिक जागरण

अजमेर की दरगाह के दीवान अब नहीं खाएंगे गौवंश का मांस

अजमेर में चल रहे सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के 805वें सालाना उर्स में देश की विभिन्न दरगाहों के सज्जादानशीन, सूफी एवं मुस्लिम धर्मगुरू उपस्थित रहे। इस सभा को संबोधित करते हुए दीवान आबेदीन के कहा कि मैं और मेरा परिवार आज से ही गौवंश के मांस के सेवन को त्यागने की घोषणा करता है। इसके साथ ही देश के मुसलमानों से भी अपील करता हूं कि साम्प्रदायिक सद्भावना की खातिर कोई भी मुसलमान गौवंश का मांस न खाए। उन्होंने कहा कि गौवंश हिन्दुओं की आस्था का प्रतीक है तो सभी धर्मों के मानने वालों को इसकी रक्षा करनी चाहिए।

कुरान के खिलाफ है तीन तलाक

वार्षिक सभा में दीवान आबेदीन ने स्पष्ट कहा कि तीन तलाक पवित्र कुरान की भावनाओं के खिलाफ है। कुरान में तलाक को अति अवांछनीय माना गया है। जब निकाह लड़के और लड़की की रजामंदी से होता है तो तलाक के मामले में भी स्त्री के साथ विस्तृत संवाद होना ही चाहिए। दीवान आबेदीन ने कहा कि आज आम मुसलमान भी शिक्षा, रोजगार, तरक्की एवं खुशहाली चाहता है। मुस्लिम लड़कियां पढ़ना और आगे बढ़ना चाहती हैं। वे कुरान व संविधान सम्मत दोनों ही अधिकार चाहती हैं। ❖

पारंपरिक धर्म को मानना ही बेहतर

असम सरकार की ओर से आयोजित नमामि ब्रह्मपुत्र नदी महोत्सव के दौरान दलाई लामा ने कहा- बलपूर्वक धर्मांतरण गलत है क्योंकि बुनियादी रूप से किसी को भी कोई धर्म चुनने और किसी भी धर्म को स्वीकार करने की पूरी आजादी है। उन्होंने कहा कि पारंपरिक धर्म को मानना ही बेहतर होता है क्योंकि धर्म परिवर्तन से भ्रम की स्थिति पैदा होती है क्लेकिन अगर कोई व्यक्ति धर्मांतरण करता है तो ऐसा स्वैच्छिक रूप से किया जाना चाहिए न कि बलपूर्वक। क्योंकि यह अच्छा नहीं होता और ऐसा नहीं होना चाहिए। दलाई लामा ने कहा कि अन्य परंपराओं, उनके मूल्यों के अध्ययन के जरिए ही धार्मिक सद्भाव,

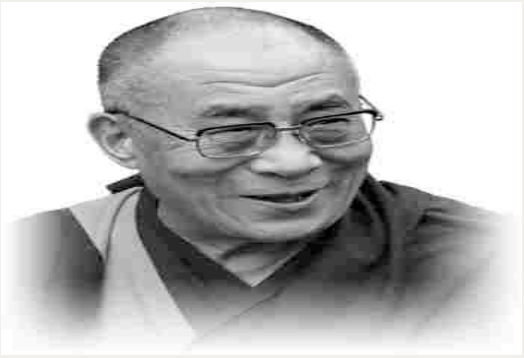

आपसी समझ और दूसरों के लिए सम्मान को सुनिश्चित किया जा सकता है। उन्होंने कहा-मैं जब तिब्बत में था, तो मेरी सोच थी कि बौद्ध धर्म सबसे अच्छा है लेकिन भारत आने के बाद जब मैं हिंदुओं, मुसलमानों, यहूदियों, ईसाइयों, पारसियों और अन्य मत रखने वालों से मिला तो मुझे महसूस हुआ कि हर परंपरा में ऐसे मूल्य हैं, जिन्हें विश्व शांति के लिए बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है। उन्होंने यह भी कहा कि वे भारत सरकार के सबसे लंबे समय से मेहमान हैं और अब भारतीय संस्कृति के वाहक बन गए हैं। दलाई लामा ने यहां 'आधुनिक समय में प्राचीन भारतीय ज्ञान' विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा- मैं पिछले 58 साल से भारत सरकार का सबसे पुराना मेहमान हूं और भारतीय संस्कृति का वाहक बन कर भारत को लौटा रहा हूँ। ❖

तीन तलाक से निजात की तड़प

मुस्लिम महिलाएं तीन तलाक से मुक्ति को पाने का बेसब्री से इंतजार कर रही हैं। वे मौलवियों की परवाह किए बिना प्रधानमंत्री से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक गुहार लगा रही हैं। उनका कहना है कि तीन तलाक और बहुविवाह प्रथा पर रोक लगाकर महिलाओं के अधिकारों की रक्षा की जाए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने गत दिनों तीन तलाक पर एक बड़ा कदम उठाते हुए महिला मंत्रियों से मुस्लिम महिलाओं का पक्ष जानने का कहा हैं। उनके इस कदम के बाद राजधानी लखनऊ सहित सूबे की अधिकांश महिलाओं के मन में राहत की उम्मीद जगी है। मुल्ला-मौलवियों के नाइंसाफी भरे कायदों की जकड़न से वे बाहर आना चाहती हैं। मुस्लिम महिलाओं का गुस्सा तीन तलाक, हलाला और बहुविवाह की प्रथा के खिलाफ दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। साथ ही उन्हें यह भी भरोसा है कि सर्वोच्च न्यायालय, इस अन्यायकारी और अमानवीय प्रथा से जरूर मुक्ति दिलाएंगे।

प्रगतिशील मुस्लिम समाज यह भी चाहता है कि भारतीय संसद हिंदू मैरिज एक्ट की तर्ज पर मुस्लिम मैरिज एक्ट बनाए। लेकिन मजहबी शिक्षा की विश्वविख्यात संस्था दारूल उलूम देवबंद इन पेचीदा सवालों को लेकर खामोश है। उसके माहतमिम मुफ्ती अबुल कासिम नौमानी कहते हैं, इस मसले को ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड देख रहा है, जिसने सर्वोच्च न्यायालय में अपना हलफनामा दाखिल किया हुआ है। दिलचस्प बात यह है कि अधिकतर मुस्लिम महिलाएं पर्सनल लॉ बोर्ड को कोई मोल नहीं देतीं। यह समस्या इतना विकराल रूप धारण किए हुए है कि अकेले सहारनपुर में मुस्लिम महिलाओं के गुजारा भत्ते से जुड़े 2,400 से ज्यादा मुकदमे परिवार न्यायालय में विचाराधीन हैं। इस साल अभी तक 100 से ज्यादा मामले अदालत में पहुंच चुके हैं। वकील अनवार अहमद कहते हैं, मुस्लिम वुमेन प्रोटेक्शन ऑफ राइट ऑन डिवोर्स एक्ट 1986 के तहत मुस्लिम महिला को यह हक है कि वह अपने हितों की रक्षा करे। उसे अपने पति से गुजारा भत्ता मिले। सीआरपीस की धारा 125 के तहत महिलाएं परिवार न्यायालय में गुजारा भत्ता दिलाने की गुहार लगा सकें। तलाक देने वाले पति की जिम्मेदारी है कि वह महिला और बच्चों के बालिग होने तक उनका भरण-पोषण करे। एक अनुमान के अनुसार भारत में करीब साढ़े आठ करोड़ मुस्लिम महिलाएं हैं। इनमें से 2,12,000 से ज्यादा तलाकशुदा हैं। सहारनपुर में हाल ही में तीन तलाक के कई मामले सामने आए हैं।

बेहद चर्चित मामला 29 वर्षीया आलिया अंसारी का है। आली तेली वाला चौक की निवासी आलिया दो बच्चियों की मां है। समाजशास्त्र एवं अंग्रेजी में एमए आलिया का 25 मार्च, 2012 को हरिद्वार के जसोधपुर गांव के वाजिद अली (पुत्र सईद अहमद) से निकाह हुआ था। निकाह के दो साल बाद ही तलाक लिखकर डाक से भेज दिया। तभी से आलिया अपने मायके सहारनपुर में है। वह कहती है कि उसका ख्याल भाई रिजवान साबरी रखता है। आलिया ने एक पक्षीय तीन तलाक एवं बहुविवाह के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में 23 जनवरी, 2017 को याचिका लगाई है। जहां उसके वकील राजेश पाठक हैं। मुस्लिम महिलाएं चाहती हैं कि जैसे लड़की की रज़ामंदी के बिना निकाह नहीं हो सकता। इसलिए तलाक में भी लड़की की सहमति होनी चाहिए। संबंधों में खाटस आने की स्थिति में किसी आलिम अथवा मजिस्ट्रेट की मध्यस्थता में दोनों को सुलह-सफाई का मौका मिलना चाहिए। ❖

साभार: पथिक संदेश

मनु की समरस सामाजिक व्यवस्था

-डॉ. बी.सी. चौहान

मनु व्यवस्था एक विषय और सामाजिक समरसता दूसरा- ये कुछ लोगों का मानना है। कुछ बुद्धिजीवी मानते हैं कि ये दोनों विषय अलग ही नहीं, बिलकुल विपरीत हैं। मनुवाद ने सामाजिक समरसता को तोड़ा है, अत: ये विषय एक साथ नहीं रखे जा सकते -ये तो विरोधी है और इनको जोड़ने का प्रयास करना विवाद को जन्म देना है। लेख में इस गुत्थी को सुलझाने का तथा सम्बद्ध विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है। सम्पूर्ण विश्व आज मानता है कि भारतवर्ष की सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है जो आज भी पृथ्वी पर जिन्दा है और सही सलामत जीवन यापन कर रही है। लेकिन इस लंबे सफर के चलते समाज में विभिन्न प्रकार की कुरीतियां भी आ गई, जो स्वाभाविक था। परिणाम स्वरूप आज समाज में एक ऐसा वातावरण बन गया है कि मनु व्यवस्था, सामाजिक समरसता को जन्म दे, यह सोचना भी समझ से परे लगता है। इन दोनों विषयों को जोड़ना ठीक है या गलत, यह तय कर पाना तो अति कठिन हो गया है। इस परिवेष में बुद्धिजीवी वर्ग का यह दायित्व हो जाता है कि वह पूर्वाग्रह छोड़ मनु व्यवस्था और सामाजिक समरसता जैसे विषयों की गहराई में उतरकर, देश, काल, स्थिति को समझने का प्रयास करे।

शास्त्रानुसार स्वयम्भू-मनु ब्रह्मा के मानस पुत्र हुए। मनुष्य एवं प्राणी जगत सुचारू रूप से सुख-शांति एवं परम-वैभव को प्राप्त करे, इसलिए एक व्यवस्था दी गई, जिसे वर्ण-व्यवस्था कहा गया। यह तो परमेश्वर का दिव्य शरीर है, इस प्रकार का प्रश्न ही नहीं आना चाहिए। मानव समाज में सुशासन के लिए मनु राजा और मनु-स्मृति नामक ग्रन्थ में राज्य का संविधान दिया गया। इसके अंतर्गत समाज को शारीरिक एवं मानसिक योग्यतानुसार मुख्य चार भागों में रखा गया- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। अत: यह स्पष्ट है कि मनु या मनु-स्मृति की कोई ऐसी धारणा नहीं रही कि कोई वर्ण तुच्छ रहे, अछूत रहे, आखिरकार समाज को सही ढंग से चलाना था। कुछ विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद की आरम्भिक रचनाओं में वर्ण व्यवस्था का उल्लेख नहीं है। अर्थात् प्रारंभ में केवल 'वैदिक या वर्ण' ही था। इसका प्रमाण महाभारत के शांतिपर्व के श्लोक 188-10, 11 और 12 से मिलता है जहां कहा गया है कि ब्रह्मा से उत्पन्न होने के कारण सारा जगत ब्राह्मण था, लेकिन स्वभाव और कर्मों में अन्तर होने के कारण वर्ण भेद आया।

ऋग्वेद के नवें मण्डल तक केवल इन्हीं वर्णों की ही चर्चा हुई है। शतपथ एवं तैतिरीय ब्राह्मण जैसे ग्रंथों में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य तीन वर्ण का ही उल्लेख है। लेकिन एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने अवश्य आता है कि इन सभी मतों में समरसता थी और कहीं भी किसी प्रकार की हीनता, या असमानता का भाव नहीं था। इस सन्दर्भ में रामायण (बालकाण्ड) का प्रसंग आता है जिसमें राजा दशरथ अपने मंत्रियों को आदेश देते हैं कि 'मैं जो यज्ञ करने जा रहा हूं इसमें सभी वर्णों के लोगों को बुलाया जाए। यह त्रेता युग में समरसता का एक उत्तम उदाहरण माना जाता है। भारतीय दर्शन के लोकप्रिय ग्रन्थ गीता के श्लोक अध्याय

4:13 तथा 18:41 में कहा गया है कि चार वर्णों की रचना जन्म के आधार पर नहीं बल्कि व्यक्तियों के कर्म स्वभाव तथा गुणों के अनुसार की गई है।

हम यह भूल गए कि हमारे पूर्वजों ने भी यह व्यवस्था कई हजारों वर्ष तक चलाई थी और विश्व में राज किया। आज यदि हमारी पात्रता नहीं रही तो व्यवस्था खराब कैसे हो सकती है? प्रश्न है कि समयानुसार व्यवस्था में कुछ आवश्यक बदलाव होना चाहिए था क्या वह हमने किया?उसमें समाज के सभी वर्णों की समरसता का ध्यान रखा गया था? नहीं..... बिलकुल नहीं। तथ्य बताते हैं कि इस लम्बे काल खण्ड में दीन, ईमान, धर्म का नाश हुआ और केवल ''जिसकी लाठी उसकी भैंस'' ही धर्म बन गया। प्रभावी वर्ग स्वार्थी बन राज कर गया, समाज का ताना-बाना टूटता गया।

दूसरी ओर समरता शब्द की व्यापकता को भी हमें समझना होगा। यह शब्द 'समानता' शब्द का पर्यायवाची न होकर व्यापक अर्थ लिए हुए है। किसी भी समाज की व्यवस्था में पूर्णतया समानता नहीं हो सकती क्योंकि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताओं व पात्रताओं में विभिन्नताएं हैं। जो एक अच्छा योद्धा हो सकता है उसे रक्षा का कार्य, तथा जो विद्वान है उसे समाज के शिक्षण व प्रशिक्षण के कार्य में ही लगाना उचित रहेगा और जो बौद्धिक भी नहीं शूरवीर भी नहीं तो उसे उसके स्तर पर ही कार्य दिया जाए तो ही उचित रहेगा। अत: किसी भी परिवार, समाज व देश को शांतिपूर्ण समृद्ध बनाने के लिए समानता की नहीं, बल्कि सब प्रकार की क्षमताओं के मानव संसाधनों की उचित उपयोगिता की आवश्यकता रहती है। इसमें समानता से नहीं बल्कि समरसता से काम चलेगा। हम समानता की बार-बार चर्चा करते हैं लेकिन उसके मायने कुछ गहरे होते हैं- जैसे भारतीय संविधान में समानता की बात मौलिक आधार के रूप में लिखी गई है, लेकिन इसका अर्थ यह कभी भी नहीं हो सकता कि एक ही कक्षा में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों का ये मौलिक अधिकार है कि वे योग्यता न होते हुए भी उसके समान पद को प्राप्त कर सकते हैं जिसे सबसे आगे रह कर एक श्रेष्ठ छात्र ने अपने जीवन में प्राप्त किया।

किसी भी संस्था में सभी कर्मी समान नहीं होते लेकिन सभी अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग कर समरस हुए, एक हुए तो उस संस्था, समाज या राष्ट्र को प्रगति मिली। अस्पृश्यता और जाति विभाजन जैसी महामारी हमारे समाज में मनु व्यवस्था की देन नहीं बल्कि समाज के प्रभावी एवं स्वार्थी वर्ग के अधर्म मार्ग पर चलने, समरस भाग त्यागने से उत्पन्न हुई। डॉ. अम्बेडकर की पुस्तक 'अस्पृश्यता' के अनुसार जाति वर्ण का विकृत रूप है।

मनु-स्मृति से ही दो और श्लोक लेते हैं जो सबकी आंखे खोलने का सामर्थ्य रखते हैं (अध्याय 3 के 167 और 168) से स्पष्ट हो जाता है कि मनु महाराज तो सामाजिक व्यवस्था के बुनकर थे और समरसता के जन्मदाता। स्मरण रहे कि समस्त भारतीय प्राचीन ग्रन्थों की रचना जाति, पन्थ, भाषा व भूगोल के आधार पर नहीं बल्कि केवल और केवल मानव-मात्र व सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण को ध्यान में रखकर की गई है।

मनु के समरस समाज के उदाहरण में वाल्मीकि द्वारा रची गई रामायण और वेद व्यास द्वारा रचे गए कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ इस धरती पर इतिहास में इस प्रकार के कई उदाहरण मिलते हैं। यहां, सब की आलोचना का शिकार हुई मनु-स्मृति से ही दो और श्लोक लेते हैं जो सबकी आंखे खोलने का सामर्थ्य रखते हैं (अध्याय 3 के 167 और 168) से स्पष्ट हो जाता है कि मनु महाराज तो सामाजिक व्यवस्था के बुनकर थे और समरसता के जन्मदाता। स्मरण रहे कि समस्त भारतीय प्राचीन ग्रन्थों की रचना जाति, पन्थ, भाषा व भूगोल के आधार पर नहीं बल्कि केवल और केवल मानव-मात्र व सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण को ध्यान में रखकर की गई है। ❖

लेखक हि0प्र0 केन्द्रीय वि0वि0 धर्मशाला, कांगड़ा में प्राध्यापक हैं।

माँ

माँ ममता की कामधेनु, प्रेम की गागर,
गागर में युगों से,
बहते कोटि सागर।
सूरज न्यारा, चांद न्यारा और न्यारा ध्रुवतारा,
माँ को तो प्राणों से प्यारा अपना राजदुलारा।
नदियां न्यारी, कोयल न्यारी, धरा भी न्यारी,
माँ को प्राणों से प्यारी, अपनी राजदुलारी।
जन्म दिया पाला-पोसा, घर में गंगा स्नान कराया।
भूखे रहकर गोदी में, छप्पन भोग खिलाया,
खुद भूमि शैय्या, बेटी को पलंग बिछाया।
माँ तो है प्रथम गुरू, गूढ़ रहस्य पढ़ाया।
पूत-कपूत सुना, पर न माता सुनी कुमाता,
तेरे आंचल तले, तीर्थों का नीर समाता।
माँ तो है ईश की, कलाकृति अनमोल,
इस रिश्ते का है जग में अमूल्य मोल।
माँ बार-बार लिख यह पैगाम,
तेरे चरणों में रवि, करे कोटि प्रणाम। ❖

रवि कुमार सांख्यान
बिलासपुर, हि०प्र०

माँ

माँ तो अपना धर्म निभाती।
क्षुधा-पिपासा सब सह जाती।।
माँ आंचल में जीवन पलता।
सृष्टि क्रम इससे चलता।।
लालन-पालन माँ कर जाती।
निष्ठामय कर्तव्य निभातीं।
गोद इसके गूंजे किलकारी।
मन में इसके ममता भारी।।
आंचल इसके दूध भरा है।
आंखों में बस नीर झरा है।।
सुख उपजे जब सहलाए गात।
'मातृदेवोभव' सच्ची बात।।
प्रभु-मूर्ति है माँ साकार।
'प्रसाद' न पाए इसका पार।। ❖

राम प्रसाद शर्मा
सिहाल, कांगड़ा हि०प्र०

भ्रष्टाचार

रोज-रोज सुनने में आता है नाम भ्रष्टाचार।
क्या है भ्रष्टाचार जिसका होता खूब प्रचार।।
मानव मन में घुस गया दीमक रूपी भ्रष्टाचार।
कई घोटालों घपलों से उजागर हुआ यह भ्रष्टाचार।।
भ्रष्टाचार समाप्त करने की बातें करती सरकार।
लेकिन ऊपर से नीचे तक संलिप्त कई कर्णधार।।
मीडिया, अखबार, टी.वी. सुनते प्रायः समाचार।
जिनसे भारत देश हुआ विश्व में शर्मसार।।
खेद है कि समझे न कोई, इसका आध्यात्मिक सार।
भाई-बहनों। देह अभिमान से उत्पन्नयह विकार।।
जिसका आचरण है भ्रष्ट, उसमें भरा है भ्रष्टाचार।
सभी मानव अपना आचरण सुधारे, मिट जाएगा भ्रष्टाचार।।
सरकारें लाख कोशिश करें, दण्ड दे न मिटेगा भ्रष्टाचार।
स्वयं को आत्मा समझें, सोच सुधारें तब होगा इसमें सुधार।।
राजयोग साधना से भगाना है, पंचभूतों से उत्पन्न विकार।
मनसा-वाचा-कर्मणा जीवन में लाना होगा निखार।।
मनुष्यात्माओं को अध्यात्म का करना होगा अनुसरण।
शुभ संकल्प खजाने से, मन-बुद्धि का होगा शुद्धिकरण।।
भौतिकवाद की दौड़ से हट, आध्यात्मवाद बढ़ाना होगा।
लोभलालच छोड़ सत्यता, ईमानदारी को अपनाना होगा।।
जब सदगुण सदविचारों का, प्रवेश मन-बुद्धि में आएगा।
निश्चित ही भ्रष्टाचार का, नासूर समाप्त हो जाएगा।।
सभी भाई-बहनें प्रतिज्ञा करें भ्रष्टाचार को मिटायेंगे।
नई स्वर्णिम दुनिया फिर, इस धरा पर लाएंगे।। ❖

अमर नाथ कौंडल, दाड़लाघाट, हि॰प्र॰

उत्तर:1. स्विटजरलैंड, 2. सऊदी अरब, 3. अमेरिका का रॉकफेलर, 4. यूरेनियम, 5. दक्षिण आस्ट्रेलिया, 6. शिमला में, 7. 6, 8. फ्रांस, 9. घटपर्णी, 10. नॉर्वे।

जरूरी है खाद्य तेलों की गुणवत्ता की जाँच

खानपान के जरिये ही हमें कई बीमारियां होती हैं, इसलिए हेल्दी खाने की सलाह हमेशा दी जाती है। हम जो तेल प्रयोग करते हैं उसमें भी मिलावट होता है इसका खुलासा सेंटर फॉर साइंस एडं इनवायरमेंट 'सीएसई' ने साल 2012 में किया था। इस संस्था ने तेलों के 30 से अधिक ब्रांडों पर शोध के बाद यह खुलासा किया। सीएसई की मानें तो तेलों में अंतराष्ट्रीय मानक के अनुसार 2 प्रतिशत तक ही ट्रांस फैट होना चाहिए, जबकि इनमें 5 से 23 प्रतिशत तक ट्रांस फैट मौजूद होता है। डब्यूएएचओ ने भी ट्रांस फैट को सेहत के लिए खतरनाक माना है।

भारत की स्थिति

तेल की गुणवत्ता की बात करें तो भारत में स्थिति बुरी है, क्योंकि यहां का निर्धारित मानक अंतर्राष्ट्रीय मानक से कई गुना अधिक है। हालांकि सीएसई की पहल के बाद भारतीय खाद्य एवं सुरक्षा मानक प्राधिकरण ने तेल कंपनियों के लिए भार से 10 प्रतिशत से कम ट्रांस फैट का मानक तय किया जिसे 2017 में 5 प्रतिशत तक करना है। इसे सेहत में सुधार होगा और बीमारियों से बचाव भी होगा। लेकिन जब तक यह स्तर शून्य न हो जाये कुकिंग ऑयल का ज्यादा प्रयोग सही नहीं है।

होती हैं बीमारियां

कुकिंग ऑयल में मौजूद ट्रांस फैट का सबसे बुरा प्रभाव दिल पर पड़ता है और इसके कारण दिल की बीमारियां होने लगती हैं। इसके अलावा ट्रांस फैट कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी के लिए भी जिम्मेदार है। ट्रांस फैट सबसे अधिक फास्ट और जंक फूड में होता है जिसे हम बहुत ही चाव से खाते हैं। इनके सेवन से अल्जामइमर और डायबिटीज भी हो सकता है।

क्या है ट्रांस फैट

ट्रांस फैट विषाक्त पदार्थ की तरह है, इसे कृत्रिम फैट भी कहते हैं। यह सस्ते तेलों को आंशिक हाइड्रोजिनेशन करके बनाया जाता है। नैचुरल ऑयल और जीव-वसा में यह फैट नहीं होता है। वैसे दिखने में तो यह घी और मक्खन की तरह ही होता है, इसलिए इसकी पहचान करना मुश्किल होता है। इसकी खासियत यह है इसमें बने व्यंजन बहुत अधिक देर तक चलते हैं। चूंकि यह लागत में बहुत ही सस्ता है इसलिए इसका प्रयोग ज्यादातर लोग करते हैं। घरों में इस्तेमाल होने वाले रिफाइंड ऑयल और वनस्पतियों में भी यह फैट होता है।

ऐसे में क्या करें?

तेल में ट्रांस फैट मौजूद है यह सोचकर आप इसका प्रयोग बंद तो नहीं कर सकते, लेकिन इससे होने वाली बीमारी से बचने के तरीके जरूर निकाल सकते हैं। नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ न्यूट्रीशन द्वारा किये गये शोध की मानें तो थोड़े-थोड़े समय यानी लगभग हर तीन महीने पर अपना कुकिंग ऑयल बदलते रहें। इसके लिए आप दो विकल्पों को चुन सकती हैं । एक जिसमें ओमेगा-3 हो और दूसरा जिसमें ओमेगा-6 हो। सरसों और सोयाबीन में ओमेगा-3 होता है जबकि सूरजमुखी और मूंगफली में ओमेगा-6 होता है। इनको बदलकर प्रयोग करें और स्वस्थ रहें।

जब भी बाजार तेल खरीदने जायें तो उसमें लिखे निर्देशों को अच्छे से पढ़ें, ऐसा तेल ही खरीदें जिसमें ट्रांस फैट का स्तर सबसे कम हो। ❖

साभार-ओन्ली माई हैल्थ

जैविक खेती से खुशहाली

देश में खेती के तौर-तरीक बदल रहे हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की जगह अब किसान जैविक खेती की ओर रूख कर रहे हैं। जैविक कृषि में लागत काफी कम आती है और सिंचाई भी कम करनी पड़ती है, जबकि पैदावार अधिक और गुणवत्तापूर्ण होती है। जैविक कृषि से होने वाले मुनाफे से जहां किसानों के चेहरे खिल रहे हैं, वहीं स्थानीय लोगों को पूरे साल रोजगार भी मिल रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मिट्टी और इन्सानों के स्वास्थ्य के लिए भी यह काफी फायदेमंद है। खास बात यह है कि खेतों में काम करने के लिए किसान परिवार हरियाणा से मजदूर नहीं ले गया, बल्कि वहीं के आसपास के गांवों के 300 मजदूरों को रखा और उन्हें पूरे साल का काम दिया। इसके अलावा, उन्हें घर से लाने और वापस घर तक छोड़ने की व्यवस्था बिल्कुल वैसे ही की, जैसे गुरूग्राम की बहुराष्ट्रीय कंपनियां करती हैं। यानी इस परिवार ने जैविक खेती के लिए विशुद्ध व्यावसायिक तरीका अपनाया। इतने बड़े पैमाने पर व्यावसायिक रूप से खेती करना तभी संभव है जब उसमें लाभ होगा। जाहिर है देश के बड़े कृषि वैज्ञानिक और नौकरशाह आज तक जिस जैविक खेती को घाटे का सौदा बताकर उसे नजरअंदाज कर रहे थे, वह खेती किसी भी तरह से घाटे का सौदा नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि इसके लिए जरूरी माहौल, शीतभंडारण और मंडी की व्यवस्था की जाए।

जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग

वैश्विक स्तर पर जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। इंटरनेशनल कम्पीटेंस फॉर ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर के एक अनुमान के मुताबिक, जैविक उत्पादों की घरेलू मांग सालाना 40-50 फीसदी की दर से बढ़ रही है। वहीं, वैश्विक मांग में 20-25 फीसदी का इजाफा हो रहा है।

जैविक खाद

राइजोबियम, एजोटोवैक्टर, एजोस्पाइरिलम, फॉस्फो बैक्टीरिया, एसिटो बैक्टर, एजोला, नील हरित शैवाल, कम्पोस्ट, गोबर की खाद, केंचुआ खाद, हरी खाद, नीम का खल।

इसके फायदे

1. बीज, जड़, कंद एवं मृदा उपचार में सहायक होती है, 2. जमीन की जलधारण क्षमता बढ़ाने में मददगार होती है, 3. मिट्टी में सूक्ष्य जीवाणुओं की वृद्धि करती है, 4. जमीन की निचली सतह में सुधार लाने में सक्षम होती है, 5. नाईट्रोजन, फॉस्फोरस के साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता होती है, 6. मिट्टी की भौतिक दशा सुधारने में कारगर होती है, 7. बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ाने में मददगार होती है, 8. ओजपूर्ण पौधों का विकास होता है, 9. भूमि का स्वास्थ्य ठीक रहता है, 10. वृद्धि कारक हारमोन की उपलब्धता होती है, 11. मिट्टी की जैव सक्रियता बढ़ाने में सक्षम होती है।

कैंसर फैलाते कीटनाशक

कीटनाशक कैंसर कारक होते हैं। इनसे भ्रूण का विकास रूकता है और गर्भपात हो जाता है। बच्चे में जन्मगत विरूपता उत्पन्न हो जाती है। तंत्रिका तंत्र में खराबी आती है और हार्मोन भी ठीक से नहीं बनते हैं। साथ ही, मस्तिष्क विकसित नहीं हो पाता, जिससे 80 फीसदी मामलों में लड़कियां प्रभावित होती हैं। रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती है जिससे रोग संक्रमण के खतरे बढ़ जाते हैं।

यूरोप-अमेरिका में पाबंदी

जिन कीटनाशकों पर अमेरिका और यूरोपीय देशों में प्रतिबंध है, उन्हें भारत में धड़ल्ले से बेचा जा रहा है। भारत में मैंकोजेब, फोरेट, मिथाइल पैराथियान, मोनोक्रोटोफॉस, साइपरमेथ्रियान, क्लोरोपाइरीफॉस, मैलाथियान, कार्बेन्डाजिम, क्यूनिलफॉस और डाइक्लोरोव्स जैसे कीटनाशक व फंफूदीनाशक रसायन प्रयोग किए जाते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए घातक हैं। इनमें से कई रसायन यूरोप एवं अमेरिका जैसे देशों में प्रतिबंधित हैं। इन रसायनों से कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी होने के अलावा इनका प्रजनन अंगों, लीवर, किडनी, दिल, फेफड़ों और मस्तिष्क पर भी असर पड़ता है।

जैविक कीटनाशक जो हानिकारक नहीं

ट्राइकोग्रामा, ट्राइकोडरमा, ब्यूबेरिया बैसियाना, वैसीकुलस माइकोराईजा, न्यूक्लियर पाली, बैसिलस यूरिजियेंसिस, नीम आधारित कीटनाशक। ❖

SURYA FOUNDATION

Tel. : 011-25262994, 25253681 Website : www.suryafoundation.net.in

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

संघ संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम तरुणों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा–

1. **CA, Engineers (IIT, NIT & Regional Engineering Colleges), MBA and Mass Communication**

आयु 20–23 वर्ष। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 3 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के पश्चात 1 वर्ष की On Job Training (OJT)/ Practical & Campus Training (PCT) होगी जिसके बाद पोस्टिंग दी जायेगी। वेतन निम्न प्रकार होगा:

Post	Experience	Initial Training + OJT / PCT	After Training CTC
CA	Fresher	40,000 - 50,000	As per performance
	5 years	60,000 - 75,000	- do -
	10 years & above	80,000 - 1,00,000	- do -
Engineer	B.Tech. (IIT)	50,000	- do -
	B.Tech. (NIT)	35,000	- do -
	B.Tech.	20,000 - 25,000	- do -
MBA		15,000 - 20,000	- do -
Mass Communication (Media)		20,000 - 25,000	- do -
MCA, M.Sc., M.Com., M.A.		20,000 - 25,000	- do -
B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store		15,000	- do -
B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com.		8,000	- do -

2. **Graduate Management Trainee (GMT)**

योग्यता - 2017 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। **आयु:** 18 वर्ष से कम। सूर्या साधना स्थली झिंझोली में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद **OJT/PCT** में भेजा जाएगा। **OJT/PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA/MCA करने की सुविधा दी जायेगी।** प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा फ्री रहेगी। साथ ही 3,000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ **11वीं में 6,000/-, 12वीं में 7,000/- Graduation 1st yr में 9,000/-, IInd yr में 10,500/-, IIIrd में 12,000/-, MBA/MCA (Ist yr में 15,000/-, MBA/MCA IInd yr में 20,000/- stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 30,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।**

3. **Assistant Staff Cadre (ASC)**

योग्यता - 2017 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम 55% तथा गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। **आयु:** 18 वर्ष से कम। सूर्या साधना स्थली झिंझोली में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद **OJT/PCT** में भेजा जाएगा। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान 3000/- प्रतिमाह stipend मिलेगा तथा भोजन और आवास की सुविधा फ्री रहेगी। **तीन वर्ष की OJT/PCT** के दौरान **Stipend - 1st yr** : 6000/- प्रतिमाह व आवास, **2nd yr : 7000/-** प्रतिमाह व आवास, **3rd year: 8000/-** प्रतिमाह व आवास। **After training 11000/- (CTC)** प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

(आवेदन अलग कागज पर हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें)

Affix latest Photograph here

पूरा नाम ..... जन्मतिथि (अंको में) .....

पिता का नाम .....

पिता का व्यवसाय ..... मासिक आय .....

भाई कितने हैं (आप को छोड़कर) ..... बहनें कितनी हैं..... जाति .....वर्ग.....

विवाहित / अविवाहित .....

पढ़ाई का विवरण (Mark Sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें) .....

पत्र व्यवहार का पता ..... पिन कोड ..... टेलीफोन नं॰ ..... Mobile No. .....Email .....

NCC / NSS / OTC / ITC / शीत शिविर / PDC (कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें)..... शिविर में दायित्व.....

सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे ..... दायित्व.....

सूर्या परिवार में कोई परिचित है तो नाम एवं विभाग .....

सूर्या फाउण्डेशन के इंटरव्यू में पहले भाग ले चुके हैं तो वर्ष तथा कैडर का नाम .....

अपनी विशेष क्षमता, योग्यता, गुण एवं उपलब्धि अवश्य लिखें। इसके अतिरिक्त अपने विषय में कोई अन्य जानकारी देना चाहें तो अलग पेज पर लिखकर भेजें।

कृपया विस्तारपूर्वक बॉयोडाटा के साथ निम्न पते पर आवेदन करें। Category-1 के आवेदनकर्ता इसके अतिरिक्त अपना detailed CV भी भेजें। आवेदन E-mail द्वारा इस Email-id : suryainterview@gmail.com पर भेज सकते हैं।

सूर्या फाउण्डेशन : बी-3/330, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

विज्ञापन छपने के एक माह के अंदर आवेदन करें।

सबल समाज विकास में भारतीय महिलाओं का योगदान

-डॉ. अर्चना गुलेरिया

सबल समाज निर्माण में जितना पुरूषों का योगदान रहा है उतना ही योगदान भारतीय महिलाओं का भी रहा है। भारत की महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र चाहे वह सरकारी या निजी विज्ञान या सामाजिक क्षेत्र हो, हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। देश में महिला सशक्तीकरण की इससे बड़ी मिसाल कोई दूसरी नहीं हो सकती। एक और महत्वपूर्ण पहलू यहाँ गौर करने के लायक है कि ये सभी महिला वैज्ञानिक कैरियर के साथ परिवार के मध्य तो बेहतर संबंध बैठा ही रही हैं, अपनी प्रतिभा और मेहनत के बूते विशेष तौर पर देश की भी सेवा कर रही है। इन महिलाओं ने 12 से 18 घंटे लगातार काम करके इस मिशन को सफल बनाया है।

वैज्ञानिक शोध एवं अनुसंधान ऐसा ही एक क्षेत्र है, जिसमें महिलाओं उत्कृष्ट योगदान और क्षमता के बावजूद उन्हें समुचित प्रोत्साहन और अवसर कम मिल पा रहे हैं। गणित, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में जटिल मीमांसाओं और सैद्धांतिकी की विकास प्रक्रिया में महिलाएं अप्रतिम योगदान कर सकती हैं। लेकिन उच्च शिक्षा और शोध के स्तर पर महिलाओं की संख्या आज भी संतोषजनक नहीं है। विज्ञान से संबंद्ध संस्थाओं में महिलाओं की मौजूदगी के मामले में भारत विश्व के 69 देशों की सूची में लगभग सबसे निचले पायदान पर है। ऐसे में आवश्यक है कि महिला सशक्तीकरण के प्रयास को तेज करते हुए विज्ञान में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाया जाए ताकि सामाजिक और सांस्थानिक भेदभावों एवं पूर्वाग्रहों को तिलांजलि दी जाए। बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-4 की परियोजना निदेशक रही डी.आर.डी-ओ. की वैज्ञानिक टेसी थामस जिन्हें अग्निपुत्री भी कहा जाता है के अनुसार '' यदि महिलाओं को विज्ञान के क्षेत्र में अपनी क्षमता और योग्यता साबित करने का मौका दिया जाए तो वे पुरूषों से बेहतर साबित हो सकती है।''

शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार पाने वाली न्येरोसाईटिस्ट डा. विदिता वैद्य कहती हैं '' किसी भी साइंस कांग्रेस में जाएं तो आपको मंच पर महिला वैज्ञानिक कम ही दिखती हैं। इससे यह संदेश जाता है जैसे हम एक भी महिला वैज्ञानिक को तलाश नहीं पाए। पूरी प्रक्रिया में कोई न कोई गड़बड़ी तो है।''

भारतीय मूल की वैज्ञानिक सुनीता विलियम ने अंतरिक्ष केन्द्र पर जाकर यही दर्शाया है कि महिलाएं कठिन से कठिन हालात का मुकाबला करने में पीछे नहीं हैं।

आज एक कड़वी सच्चाई यह है कि प्रतिभावान भारतीय महिला वैज्ञानिकों से हमारे ही देश के लोग परिचित नहीं है। आप किसी स्कूल में जाएं और बच्चों से कुछ महिला वैज्ञानिकों के नाम लेने के लिए कहें। उनमें ज्यादातर मैरी क्यूरी या हाकिंस का नाम लेंगे। लेकिन उनमें से कोई किसी भारतीय महिला वैज्ञानिक का नाम नहीं लेगा, क्योंकि हमारी स्कूली किताबें, मीडिया और पढ़े लिखे लोगों में इनका कभी जिक्र ही नहीं आता। अगर हम चाहते हैं कि लड़कियां विज्ञान को करियर बनाएं तो हमें उनके सामने ऐसे भारतीय आदर्श रखने होंगे, जिन्होंने इसी परिवेश में रहकर वैज्ञानिक बनने का सफर तय किया। अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत को विश्व पटल पर ले जाने वाली महिला वैज्ञानिकों पर नजर डालें तो उनमें:-

- अनुराधा टी.के. जो पृथ्वी के केन्द्र से 36000 कि.मी दूर अंतरिक्ष में संचार उपग्रह भेजने में माहिर हैं।
- नंदिनी हरिनाथ उप संचालन निदेशक, मंगल आर्बिटर मिशन जो मंगलयान प्रोजेक्ट का हिस्सा थीं।
- यमुना कृष्णन शाँतिस्वरूप भटनागर सम्मान से सम्मानित वैज्ञानिक बायोटेक्नोलाजी के क्षेत्र में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।
- सुमिता दास इसरो की वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं, वे मंगल आर्बिटर मिशन से सम्बद्ध वैज्ञानिक हैं।
- डॉ॰ इंदिरा हिंदुजा जिनकी वजह से भारत में पहली बार परख नली शिशु का जन्म हुआ।
- डॉ. अदिति पंत 1983 में अंटार्कटिका महाद्वीप जाने वाली पहली भारतीय महिला वैज्ञानिक।

व्यवसायिक क्षेत्र में:-

- ज्योति रेडडी: ज्योति रेडडी का जीवन किसी परी कथा जैसा लग सकता है। खेत में 5 रूपये दिहाड़ी की मजदूरी से लेकर अमेरिका में एक सॉफ्टवेयर कंपनी की सीईओ की कुर्सी तक के अपने सफर में ज्याति को कांटों भरी राह पर चलना पड़ा।

भारतीय बच्चियों को हम यही कहेंगे कि हिम्मत और हौंसला व कड़ी मेहनत से किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ें, सफलता उनके कदम चूमेगी। ❖ **लेखिका शिक्षिका एवं मातृवन्दना संस्थान से जुड़ी हैं।**

महामहिम राज्यपाल द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा जाँच व रक्तदान शिविर का उद्घाटन व स.वि.मं. उच्च विद्यालय धर्मपुर के नए भवन का शिलान्यास

सोमवार, दिनांक 22 मई, 2017 प्रात: 11:00 बजे हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत के कर कमलों द्वारा सरस्वती विद्या मन्दिर उच्च विद्यालय धर्मपुर के नए भवन भूमि पूजन एवं शिलान्यास किया गया। शिलान्यास कार्यक्रम में सांई इंजनियरिंग फाउंडेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजकुमार वर्मा, स्थानीय विधायक महेन्द्र सिंह, सांसद अनुराग ठाकुर, हेमचन्द राष्ट्रीय मंत्री विद्याभारती, प्रांत संघ चालक कर्नल (रि०)रूप चन्द, प्रांत प्रचारक संजीवन कुमार और क्षेत्र के कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। महामहिम राज्यपाल ने अपने संबोधन में लोगों से स्वयं अपना उदाहरण बताते हुए कहा कि हमें जैविक खेती पर बल देना चाहिए। इस देव भूमि में हमें अच्छे संस्कारवान बालक का निर्माण करना है। संस्कार ही बालक को आगे बढ़ाते हैं जिससे वह नर से नारायण हो जाता है। स्थानीय सांसद व विधायक ने भी विद्यालय के भवन निर्माण में अपना सहयोग देने की बात कही। विद्या भारती के श्री हेम चन्द ने अपने उद्बोधन में कहा विद्या भारती के विद्यालय में संस्कारों को प्राथमिकता दी जाती है। कुछ संस्कार व्यक्ति को परिवार से मिलते हैं तथा कुछ समाज से मिलते है। इसके साथ ही सांई इंजीनियरिंग फाउंडेशन एवं डॉ० हेडगेवार स्मारक समिति शिमला के द्वारा दो दिवसीय नि:शुल्क चिकित्सा जाँच शिविर एवं रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। इसमें सरकाघाट, धर्मपुर क्षेत्र के 2,200 लोगों ने जाँच करवाई तथा 65 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। कार्यक्रम के पश्चात् भण्डारे की भी व्यवस्था थी, जिसमें 5000 से अधिक लोगों ने अपनी सहभागिता दिखाई। ❖

आइए जानें रैनसमवेयर की बारीकियां

-डॉ रमेश शर्मा

आजकल डाकुओं को असल जिंदगी में नहीं देखा जाता परंतु रैनसमवेयर के बारे में जानकर आप स्वीकार करेंगे कि डाकू थे। डाकू हैं और भविष्य में भी रहेंगे बस इतना सा है कि डाका देने, फिरौती वसूलने, डाके में प्रयुक्त हथियार और डाके का तरीका बदलता रहता है। रैनसमेवयर यानी फिरौती। आजकल खौफ का पर्याय बन चुके इस मैलवेयर ने भी तो फिरौती का ऑनलाइन सिस्टम विकसित किया है। ये मैलवेयर कंप्यूटर में आने पर उस सिस्टम की फाइल्स को एंक्रिप्ट कर देता है, या कंप्यूटर को लॉक कर देता है साथ ही अलर्ट दिखाता है कि आपकी फाइल एंक्रिप्ट हो चुकी है और यदि आप अपनी फाइल पुनः प्राप्त करना चाहते हैं तो +500 या कोई अन्य राशि बिटकॉइन के माध्यम से भेजें। निश्चित अवधि जैसे 3 दिन में राशि नहीं भेजने पर रैनसम दुगना या +1000 भेजना होगा अन्यथा 7 दिन बाद डिक्रिप्ट करने वाली की को नष्ट कर दिया जाएगा। जिसके बिना फाइल्स को पुनः प्राप्त करना हमेशा के लिए असंभव हो जाएगा। बिल्कुल उसी तरह जैसे डाकू कहा करते थे समय पर फिरौती ना देने या आनाकानी करने पर फिरौती राशि में वृद्धि करना और फिरौती नहीं देने पर अपहृत को सदा के लिए खोने की धमकी।

आओ इस रैनसमवेयर के बारे में जानें-

रैनसमवेयर क्या है:

रैनसमवेयर एक मैलवेयर है जो संक्रमित सिस्टम कीप फाइल को एनक्रिप्ट करता है और डिक्रिप्ट करने के लिए रैनसम राशि की मांग करता है। चर्चित रैनसमवेयर हैं। रैनसमवेयर के कई प्रकार हैं जैसे:

1. एंक्रिप्ट रैनसमवेयर
2. लॉकर रैनसमवेयर
3. एम बी आर रैनसमवेयर

रैनसमवेयर कैसे फैलता है-

* WannaCry में दो कंपोनेंट होते हैं एक वर्म और दूसरा रैनसम पैकेज।
* यह इंटरनेट के जरिए ईमेल अटैचमेंट के द्वारा सिस्टम में पहुंचता है।
* LAN से जुड़े कंप्यूटर में भी फैल सकता है।
* मैलवेयर को फैलाने के लिए स्पैम ईमेल कैंपेन का प्रयोग किया जाता है।
* सॉपटवेयर में सुरक्षा खामियों का प्रयोग करए इंटरनेट ट्रैफिक को मालिसियस वेबसाइट पर रिडायरेक्ट कर मैलवेयर को फैलाया जाता है। रैनसमवेयर अन्य वायरसों से किस प्रकार भिन्न है-
* इसकी एन्क्रिप्शन तकनीक का कोई तोड़ है। बिना डेक्रिप्शन की के संक्रमित कंप्यूटर की फाइल्स डाटा को डिक्रिप्ट नहीं कर सकते हैं।
* यह सिस्टम में मौजूद सभी प्रकार के "लेक्सको एनक्रिप्ट करने में सक्षम है।

यह फाइल्स के नाम को बदल सकता है जिससे यूजर फाइल डाटा को पहचान ना सके।

* यह फाइल्स के नाम के साथ अलग-अलग एक्सटेंशन लगा सकता है।
* यह मैलवेयर फाइल एंक्रिप्शन का संदेश अलर्ट दिखा कर फिरौती मांगता है।
* यह सिरोही राशि बिटकॉइन में मांगता है जो एक क्रिप्टो करेंसी है जिसे साइबर एक्सपर्ट ट्रेक नहीं कर सकते हैं।

* यह एंटीवायरस से बचने के लिए जटिल तरीकों का प्रयोग करता है।
* यह संक्रमित सिस्टम से डाटा चुराने जैसे यूजर नेम, पासवर्ड, ईमेल आदि में सक्षम है।
* यह भौगोलिक स्थिति के अनुसार भाषा का प्रयोग कर सकता है जिससे फिरौती की संभावना बढ़ जाती है।

रैनसमवेयर का इतिहास

प्रथम रैनसमवेयर 1989 में प्रयोग किया गया। यह एड्स ट्रोजन नाम से जाना जाता था। यह "प्लॉफी डिस्क जो आजकल कंप्यूटर में प्रयोग नहीं की जाती है के माध्यम से फैला और पनामा की एक पोस्ट ऑफिस में 189 डॉलर फिरौती की मांग करता था। वर्तमान में साइबर एक्सपर्ट के अनुसार बहुत एडवांस रैनसमवेयर बन चुके हैं साथ ही क्रिप्टो करेंसी जैसे बिटकॉइन ने इनके पीछे लगे शातिर दिमाग लोगों को अपनी पहचान छुपाने में मदद की है।

कुछ खतरनाक रैनसमवेयर

रैनसमवेयर को फैलाकर साइबर अपराध की बड़ी मात्रा में राशि एकत्रित करने लगे हैं। इस कारण बहुत से रैनसमवेयर आ गए हैं। कुछ सर्वाधिक कुख्यात रैनसमवेयर निम्न हैं-

1. WannaCry : 12 मई को 2017को फैला यह रैनसमवेयर 150 देशों में 200000 से अधिक सिस्टम को संक्रमित कर चुका है।
2. Viwix: WannaCry के प्रभाव को और अधिक बढ़ाने में मदद करने वाला यह रैनसमवेयर स्वत: फैलने में सक्षम है।
3. Reveton: 2012 में सामने आया है यह रैनसमवेयर सीटाडोल ट्रोजन आधारित है वह (html;Zeus) फैमिली का है। यह एंक्रिप्ट रैनसमवेयर न होकर लॉकर रैनसमवेयर है जो कंप्यूटर को एंक्रिप्ट ना करके केवल लॉक करता है। इस रैनसमवेयर में कानूनी एजेंसी का वार्निंग अलर्ट दिखाई देता है इस कारण इसे पुलिस रैनसमवेयर भी कहा जाता है।
4. Cryptolocked : 2013 में 1, 50, 1000 कंप्यूटर को संक्रमित करने वाला यह रैनसमवेयर भी फाइल्स को एंक्रिप्ट करता है।
5. CTB Locker: यह एक नवीनतम रैनसमवेयर है जो क्रिप्टो लॉकर का परिष्कृत रूप है। यह रैनसमवेयर प्रथम अंडर ग्राउंड फोरम्सके माध्यम से बेचा गया। रैनसमवेयर है अर्थात् एक नई परंपरा की शुरुआत जिसमें साइबर अपराधी को साइबरएक्सपर्ट होने की जरूरत नहीं बल्कि वह रेडीमेड मैलवेयर खरीद सकता है जो इतना एडवांस होते हैं कि डैशबोर्ड पर उनके मैलवेयर संक्रमण का डाटा भी ट्रैक कर सकते हैं।

रैनसमवेयर से बचाव हेतु सुझाव

सुरक्षा उपायों की जानकारी के अभाव में मैलवेयर अपना काम करने में स्कल हो जाते हैं कहा जाता है कि दुर्घटना से बचने के लिए सावधाानी जरूरी है। कुछ सुझाव निम्न हैं।

अपने महत्वपूर्ण डाटा को अपने कंप्यूटर के अतिरिक्त किसी अन्य स्टोरेज जैसे हार्ड ड्राईव में अलग से स्टोर कर रखें साथ ही सुरक्षित क्लाउड स्टोरेज में भी बैकअप रखें।

1. पायरेटेड सॉप्टवेयर का प्रयोग ना करें।
2. अपने ऑपरेटिंग सिस्टम को अपडेट रखें।
3. दैनिक प्रयोग हेतु कंप्यूटर पर एडमिनिस्ट्रेटर अकाउंट के बजाय सीमित अधिकार वाले गेस्ट अकाउंट का प्रयोग करें।
4. माइक्रोसॉप्ट ऑफिस स्वीट में माइक्रोस्कोप टर्न ऑफ रखें ब्राउजर में सिक्योरिटी प्राइवेसी सेटिंग्स को सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त रखें।
5. ब्राउजर से आउटडेटेड प्लगिन्सऔर ऐडओंसको हटा दें।
6. स्पैम मेल और संदेहास्पद ईमेल को ना खोलें और उनके अटैचमेंट को डाउनलोड नहीं करें।
7. हमेशा अपडेटेड और पेड़ एंटीवायरस का प्रयोग करें। ❖

प्रवक्ता वाणिज्य, रा.व.मा.पा. (बाल) सुंदरनगर

चीन ने दाढ़ी रखने-बुर्का पहनने पर लगाया प्रतिबंध

चीन धार्मिक कट्टरपंथ से जूझ रहे अपने पश्चिमी प्रांत शिनजांग में स्थिति सामान्य करने और इस पर अपना नियंत्रण मजबूत करने के लिए कई तरीके अपना रहा है। इनमें से कई तरीके तो बेहद विवादास्पद है। चीन ने कुछ नए फरमान जारी करते हुए एक फैसला यह भी सुनाया कि अब शिनजांग में कोई भी असामान्य दाढ़ी नहीं रखेगा। साथ ही, कुछ यूरोपीय देशों की तर्ज पर चीन ने भी अब सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के बुर्का पहनने पर पाबंदी लगा दी है। इससे पहले चीन ने यहां रमजान के दौरान लोगों के रोजा रखने पर भी प्रतिबंध लगा दिया था। शिनजांग प्रांत की सरकार ने कई नए कानून पारित किए। इन्हें प्रांत की आधिकारिक न्यूज वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। सार्वजनिक स्थानों पर काम करने वाले ऐसे लोग जो कि अपने पूरे शरीर को ढकते हैं, उन्हें ऐसा ना करने के लिए राजी किया जाएगा। चेहरे को भी हिजाब से ढकने पर पाबंदी लगाई गई है। ऐसा करने वालों को सार्वजनिक जगहों पर नहीं घुसने दिया जाएगा और पुलिस में उनकी शिकायत की जाएगी। साथ ही, अब यहां कोई भी सरकारी, रेडियो, टेलिविजन देखने-सुनने और अन्य सरकारी सुविधाओं का इस्तेमाल करने से इनकार नहीं कर सकता है। इसके अलावा, धार्मिक तौर-तरीके से शादी ना कर कानूनी तरीके से विवाह करने का भी नियम जारी किया गया है। इतना ही नहीं, हलाल शब्द का इस्तेमाल करने पर भी पाबंदी लगा दी गई है। नए नियमों में कहा गया है, अभिभावकों को अच्छा बर्ताव करना चाहिए, ताकि उनके बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़े। उन्हें चाहिए कि वे अपने बच्चों को विज्ञान, संस्कृति और बाकी अच्छी चीजों को ज्ञान दें। वे बच्चों को कट्टरता का विरोध करने की सीख दें। ❖

गौचर की रेनू बनीं पेटीएम पेमेंट बैंक की सीईओ

चमोली जिले की रेनू सती ऑनलाइन वॉलेट कंपनी पेटीएम पेमेंट बैंक की सीईओ बनी हैं। आरबीआई ने पेटीएम पेमेंट बैंक के पहले सीईओ के रूप में 41 वर्षीय रेनू के नाम पर मुहर लगाई है। रेनू गौचर के पास झालीमठ गांव की मूल निवासी हैं। फिलहाल वह अपनी मां मीना सती के साथ दिल्ली के रोहिणी में रहती हैं।

नोटबंदी के बाद ऑनलाइन पेमेंट के रूप में बेहतर विकल्प देने वाली कंपनियों में शामिल पेटीएम ब्रांड के साथ पिछले 13 सालों से जुड़ी रेनू ने अपना प्रोफेशनल कैरियर में पहला बड़ा मुकाम तब मिला था, जब वह 2003 में मदर डेयरी के साथ बतौर एच आर जड़ी। इसके बाद वह मैनपॉवर समूह के डिपार्टमेंट में मैनेजर बनी। कम्यूनिकेशन उनका नाता 2009 से वह सीढ़ी दर करती हुई वाइस प्रेसीडेंट-

एच आर असिस्टेंट वन- 97 के साथ सितम्बर जुड़ा। जहां सीढ़ी तरक्की एसोसिएट्स कॉरपोरेट डेवलेपमेंट के जिम्मेदार पद पर पहुंची। इसी कंपनी के साथ बतौर वाइस प्रेसीडेंट वह पिछले तीन साल से काम कर रही थीं। पेटीएम का संचालन करने वाली इस कंपनी ने हाल में पेटीएम पेमेंट बैंक के नाम से नया बिजनेस शुरू किया है। जो 23 मई को लांच किया जाएगा। सीईओ के नाम के लिए अन्य दावेदारों के मुकाबले रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने रेनू के वज़नदार प्रोफाइल को देखते हुए उनके नाम पर सहमति जताई। रेनू की पढ़ाई-लिखाई दिल्ली में ही हुई है। उनके पिता स्व॰ प्रेमबल्लभ सती प्राइवेट जॉय में थे। रेनू की तीन बहनें रचना उनियाल, सुनीता ढोडियाल और संगीता विवाहित हैं। ❖

धौला-सदिया देश का सबसे लंबा पुल

एशिया की दो महाशक्तियां भारत और चीन एक दूसरे को ध्यान में रखकर कई सामरिक महत्व के निर्माण करते रहते हैं। भारत के अन्य पड़ोसी देशों पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यामार और श्रीलंका में चीन अपने सामरिक ठिकाने बना रहा है। इसी का नतीजा है कि भारत चीन सीमा के पास लगातार सामरिक महत्व के निर्माण कर रहा है। असम और अरुणाचल प्रदेश को जोड़ने के लिए ब्रह्मपुत्र नदी पर बने 9.15 किमी लंबे पुल को इसी कड़ी में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

पुल का एक छोर सादिया है और यह वही स्थान है, जहां मशहूर संगीतकार भूपेन हजारिका का जन्म हुआ था। **है** धौला सदिया देश का अब तक का सबसे लंबा पुल है। इसकी लंबाई 9.15 किमी है और यह वर्तमान समय में सबसे लंबे बांद्रा-वर्ली सी ललक 5.6 किमी मुंबई से 3.55 किमी लंबा है। 950 करोड़ रुपये में बनकर तैयार हुए इस पुल का निर्माण 2011 में प्रारम्भ हुआ था।

स्थानीय लोगों को पुल बनने से क्या फायदा

वर्तमान समय में तेजपुर में कलिया भोमोरा के बाद अगले 375 किमी तक ब्रह्मपुत्र नदी पर कोई पुल नही है। फिलहाल नदी के दोनों तटों के आर-पार सामान ले जाने के लिए पानी का ही रास्ता है, लेकिन यह पुल बन जाने से स्थानीय लोगों को विशेष लाभ होगा और नदी के दोनों तरफ रहने वाले लोगों के करीब 8 घंटे तक बचेंगे। इस पुल के शुरू होने से असम और अरुणाचल प्रदेश के बीच यात्रा के समय में 4 घंटे तक की कटौती होगी। इस पुल के बन जाने से स्थानीय लोगों को नजदीकी रेलवे स्टेशन तिनसुखिया और एयरपोर्ट डिब्रूगढ़ पहुंचने में आसानी होगी।

सामरिक महत्व

देश का यह सबसे लंबा पुल 60 टन के युद्धक टैंक के भार को झेल सकता है। यह पुल इसलिए भी खास है, क्योंकि यहां से चीन बॉर्डर की हवाई दूरी करीब 100 किमी है। इस पुल के जरिए सेनाओं की चीन बॉर्डर वैलोंग-किबिथू सेक्टर तक आवाजाही आसान हो जाएगी। सन् 1962 के युद्ध के समय यह हिस्सा उत्तर-पूर्व के तवांग क्षेत्र में आता था। यह पुल असम की राजधानी दिसपुर से करीब 540 और अरुणाचल प्रदेश की राजधानी इटानगर से करीब 300 किमी की दूरी पर बना है। ❖

देश की पहली प्रीमियम रेलगाड़ी तेजस एक्सप्रेस

आईएएनएस, मुंबई रेल मंत्री सुरेश प्रभु ने देश की पहली हाईस्पीड और आधुनिक सुविधाओं से लैस तेजस एक्सप्रेस को छत्रपति शिवाजी स्टेशन से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह नई प्रीमियम ट्रेन मुंबई से गोवा के करमाली के बीच सप्ताह में पांच दिन चलेगी।

मानसून के मौसम के दौरान यह सप्ताह में तीन दिन चलेगी। यह ट्रेन हर मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को मुंबई के छत्रपति शिवाजी टर्मिनस से सुबह 5 बजे रवाना होगी और उसी दिन दोपहर 1.30 बजे करमाली पहुंच जाएगी। इस सेवा की शुरुआत 24 मई से हुई है। वहीं, करमाली से यह ट्रेन मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार दोपहर 2.30 बजे रवाना होगी, जो मुंबई रात 11 बजे पहुंचेगी। गोवा से पहली ट्रेन 23 मई से चलेगी। तेजस में 30 आधुनिक डिब्बे हैं, जिसमें वेंडिंग मशीन, मैगजीन और स्नैक टेबल जैसी सुविधाएं हैं। इसमें यात्रियों की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे भी लगे हुए हैं। यह 130 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से चल सकती है। इसमें ऑटोमेटिक दरवाजे, वाईफाई और एलसीडी स्क्रीन हैं। ❖

प्रश्नोत्तरी

1. विश्व का सबसे अमीर देश कौन सा है?
2. किस देश में एक भी नदी नही है?
3. विश्व का सबसे बड़ा दानी आदमी कौन है? जिसने अपने जीवन में सार्वजनिक हित के लिए 75 अरब रुपए दान में दे दिए।
4. सबसे महँगी वस्तु क्या है?
5. कौन सी पहाड़ी प्रतिदिन अपना रंग बदलती है?
6. हि॰प्र॰ में अभी हाल ही में पुस्तक मेला कहाँ आयोजित किया गया?
7. किस देश में मच्छर नहीं पाए जाते है?
8. संयुक्त राष्ट्र संघ में कितनी भाषाओं में काम होता हैं?
9. कीट भक्षी पौधे का क्या नाम है?
10. किस देश में सूरज आधी रात को चमकता है?

चुटकुले

1. टीचर, फोर्ड क्या है?'
   रमेश, 'गाड़ी।'
   टीचर, 'ऑक्सफोर्ड क्या है?'
   रमेश, 'बैलगाड़ी।'
2. रोहन, 'पापा एक खुशखबरी है।
   पापा, 'क्या हुआ?'
   रोहन, 'आपने कहा था न कि अगर इस बार एक्जाम में पास हो गया तो गाड़ी दिलवाऊंगा?'
   पापा, 'हां मुझे याद है।'
   रोहन, 'तो पापा, खुश हो जाइए, आपके पैसे बच गए।'
3. महिला (थर्मामीटर गलत पढ़कर फोन पर), 'डॉक्टर साहब, कृपया जल्दी आइए। मेरे पति का टेम्परेचर 120 हो गया है।'
   डॉक्टर, अगर ऐसा है तो फिर मेरा काम नहीं। आप फायर ब्रिगेड को फोन कीजिए।
4. डाकू (महिला से), 'तेरा नाम क्या है?'
   महिला, 'मीना'
   डाकू, मेरी बहन का नाम भी मीना था, जा तुझे माफ किया।'
   डाकू (रामू से), 'तेरा नाम क्या है?'
   रामू, 'मेरा नाम रामू है, लेकिन लोग प्यार से मुझे मीना कहते हैं।'

HIM AGRO FOOD CORPORATION

Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

देश दुनिया को प्रभावित करने वाली हिन्दुत्व से जुडी विश्व की एकमात्र और विश्वसनीय हिन्दी न्यूज वेबसाईट

www.Hindutva.info

कोई लागलपेट नहीं सिर्फ पूरा सच

Share

☞ हिन्दूत्व के आधार को दर्शाती एकमात्र मल्टीमीडिया साईट जोकि है पूरे भारत में लोकप्रिय है।

☞ 1.5 करोड़ से भी ज्यादा फालोअरस।

☞ हिन्दू धर्म से जुडी पूरी जानकारी।

☞ राजनीति की तह तक जाने वाली सच्चाई पर आधारित खबरें व खुलासे।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।